छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
हिन्दी मासिक मुख पत्र
माह –ज्येष्ठ–आषाढ़, संवत् 2076
जून 2019

ओ३म्

अंक 164, मूल्य 10

अग्निदूत

अग्निं दूतं वृणीमहे. (ऋग्वेद)

दाऊ तुलाराम जी परगनिहा "आर्य"
का 26 जून को 94वाँ प्राकट्य दिवस

आचार्य अंशुदेव आर्य सर्वसम्मति से निर्विरोध प्रधान निर्वाचित

सभा प्रधान
आचार्य अंशुदेव आर्य

सभा मंत्री
श्री दीनानाथ वर्मा

सभा कोषाध्यक्ष
श्री चतुर्भुज कुमार आर्य

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के नवनिर्वाचित पदाधिकारी
(दिनांक 12-04-2019 से 11-04-2022 तक)

पं. काशीनाथ चतुर्वेदी
उपप्रधान दुर्ग परिक्षेत्र

दयाराम वर्मा
उपप्रधान रायपुर परिक्षेत्र

धरनीधर आर्य
उपप्रधान रायगढ़ परिक्षेत्र

डॉ. अनिल कुमार गजपाल
उपप्रधान बस्तर परिक्षेत्र

सुधीर कुमार आर्य
उपप्रधान बिलासपुर परिक्षेत्र

आचार्य बलदेव राही
उपमंत्री (कार्यालय)

डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी
उपमंत्री रायपुर परिक्षेत्र

छबिलसिंह रघुवंशी
उपमंत्री दुर्ग परिक्षेत्र

लेखनकार आर्य
उपमंत्री रायगढ़ परिक्षेत्र

वृन्दासेवक आर्य
उपमंत्री बस्तर परिक्षेत्र

सुन्दरलाल साहू
उपमंत्री बिलासपुर परिक्षेत्र

भागवतराम साहू
पुस्तकाध्यक्ष

अग्निदूत

हिन्दी मासिक

राष्ट्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक विचारों की मासिक पत्रिका

विक्रमी संवत् - २०७६
सृष्टि संवत् - १,९६,०८,५३,११९
दयानन्दाब्द - १९६

: प्रधान सम्पादक :
आचार्य अंशुदेव आर्य
प्रधान सभा
(मो. ०७०४९२४४२२४)

★

: प्रबंध सम्पादक :
आर्य दीनानाथ वर्मा
मंत्री सभा
(मो. ९८२६३६३५७८)

★

: सहप्रबंध सम्पादक :
श्री चतुर्भुज कुमार आर्य
प्र. कोषाध्यक्ष सभा
(मो. 8370047335)

★

: सम्पादक :
आचार्य कर्मवीर
मो. ८९०३१६८४२४

पेज सज्जक :
श्रीनारायण कौशिक

– कार्यालय पता –
छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द परिसर, आर्य नगर, दुर्ग (छ.ग.)४९१ ००१
फोन : (०७८८) ४०३०९७२
फैक्स नं. : ०७८८-४०११३४२ ;
e-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com

वर्ष – १४, अंक ११ — ओ३म् — मास/सन् – जून २०१९

श्रुतिप्रणीत–सिद्धधर्मवह्निरूपतत्त्वकं,
महर्षिचित्त–दीप्त वेद–सारभूतनिश्चयं ।
तदग्निसंज्ञकस्य दौत्यमेत्य सज्ञसज्ञकम् ,
सभाग्निदूत–पत्रिकेयमादधातु मानसे ।।

विषय - सूची

			पृष्ठ क्र.
१.	जिस युद्ध में कुछ भी प्रिय नहीं होता	स्व. रामनाथ वेदालंकार	०४
२.	"आखिर कब टूटेगी ये बेड़ियां"–	आचार्य कर्मवीर	०५
३.	'वेद–पारिवारिक सहृदयता की एकता का सन्देश देते हैं'	मनमोहन कुमार आर्य	०८
४.	तर्क क्षमता बढ़ेगी–तो सुधरेगा रिजल्ट	जे.एस. राजपूत	१०
५.	महाभारत में स्वर्गलोक	महात्मा चैतन्य मुनि	१२
६.	व्यक्तित्व निर्माण	आनन्द प्रकाश गुप्ता	१६
७.	निष्काम भाव से कर्मरत रहने का नाम ही योग है	विवेक प्रिय आर्य	१९
८.	कविता – खूब लड़ी मर्दानी वह.....	सुभद्राकुमारी चौहान	२१
९.	छत्तीसगढ़ के भामाशाह–दानवीर तुलाराम परगनिहा	दीनानाथ वर्मा	२२
१०.	देशभक्तो के सरताज–पं. रामप्रसाद बिस्मिल	लोचन आर्य	२४
११.	आतंक का संहार आज की आवश्यकता	डॉ. बिजेन्द्र पाल सिंह	२६
१२.	विश्व पर्यावरण दिवस	डॉ. सुरेन्द्र कादियाण	२८
१३.	वीरता की देवी रानी लक्ष्मीबाई	डॉ. अशोक आर्य	३०
१४.	मेरी आवाज	श्रीमती गीतादेवी साहू	३१
१५.	गर्मी के कारण होने वाली बीमारियाँ	डॉ. विद्याकांत त्रिवेदी	३२
१६.	समाचार प्रवाह		३३

सूचना : छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का अणुसंकेत
(ई-मेल) E-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com
(सम्पादक) E-mail : shastrikv1975@gmail.com

सूचना : हमारा नया वेब साइट देखें
Website : http:/www.cgaryapratinidhisabha.com

वार्षिक शुल्क-१००/- दसवर्षीय-८००/-

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है।

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक – आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग के वैदिक मुद्रणालय से छपवाकर प्रकाशित किया गया।

जिस युद्ध में कुछ भी प्रिय नहीं होता

वेदामृत

भाष्यकार - स्व. डॉ० रामनाथ वेदालङ्कार

यत्रा नरः समयन्ते कृतध्वजो, यस्मिन्नाजा भवति किंच न प्रियम्।
यत्रा भयन्ते भुवना स्वर्दृशः, तत्रा न इन्द्रावरुणाधि वोचतम्॥

ऋषिः मैत्रावरुणिः वसिष्ठः। देवता इन्द्रावरुणौ। छन्दः जगती।

● **(यत्र)** जहां **(नरः)** योद्धा-गण **(कृतध्वजः)** झण्डे उठाए हुए **(सम् अयन्ते)** मुठभेड़ करते हैं, **(यस्मिन्)** जिस **(आजा)** युद्ध में **(किंच)** कुछ भी **(प्रिय)** प्रिय **(न भवति)** नहीं होता है, **(यत्र)** जहां **(स्वर्दृशः)** प्रकाश के द्रष्टा **(भुवन)** राष्ट्र (भी) **(भयन्ते)** भयभीत हो जाते हैं, **(तत्र)** वहाँ **(इन्द्रावरुणा)** हे इन्द्र और वरुण ! **(नः)** हमें **(अधिवोचतम्)** कर्त्तव्य-निर्देश करो।

आज सर्वत्र युद्ध की विभीषिका व्याप्त हो रही है। हर पल आशंका बनी हुई है कि न जाने कब किन्हीं दो राष्ट्रों के मध्य युद्ध छिड़ जाए और शनैः शनैः अन्य राष्ट्रों को भी युद्ध की आग में कूदना पड़े। पर क्या युद्ध से कभी जगत् का कल्याण हुआ है ? युद्ध की लपटों में घिरकर अपार जन-धन की हानि होती है, बड़े-बड़े वीरों का संहार हो जाता है, बड़े-बड़े समृद्ध राष्ट्र जलकर खाक हो जाते हैं। यह देखो, युद्ध की गगनभेदी दुन्दुभि सुनाई दे रही है। दो राष्ट्रों की सेनाएँ अपने-अपने राष्ट्र-ध्वज फहराती हुई परस्पर मुठभेड़ करने के लिए तैयार खड़ी है। इनके मनो में वैर-भाव हैं, इनकी वाणी में कर्कश सिंहनाद है, इनके हाथों में संहारक हथियार है। अब युद्ध आरम्भ हो गया। स्थल-सेना स्थल युद्ध का कौशल दिखा रही है, जल-सेना, युद्ध-पोत और पनडुब्बियों से रण चातुरी प्रदर्शित कर रही है, वायु सेना आकाश में गोले बरसा रही है। यह सब दृश्य देखकर बड़े-बड़े 'स्वर्दृ श्' राष्ट्र भी, जो चरम उत्कर्ष का प्रकाश देख चुके हैं, भयभीत हो उठे हैं कि इस युद्ध की भीषण ज्वालाएँ न जाने कहां-कहां फैलेगी और न जाने किस-किस को अपनी लपेट में लेगी। निरपराध शिशुओं, तरुणों, वृद्धों, वनिताओं के चीत्कार दिल को दहला रहे हैं। इस भीषण युद्ध में किसी का कुछ भी प्रिय होने वाला नहीं है।

हे इन्द्र और वरुण ! तुम्हीं इस संकट-काल में हमारा मार्ग-निर्देशन करो। वेद कहते है कि तुममें से एक वृत्रों को नष्ट करता है, दूसरा प्रजाओं के व्रतों की रक्षा करता है। हे जगदीश्वर ! इन्द्र और वरुण ये दोनों तुम्हारे ही दो रुप हैं। हे इन्द्र प्रभु ! तुम 'वृत्रों 'का ध्वंस करने वाले हो। उन्हें नष्ट कर विद्यमान वे सब दुर्भावनाएँ ही वृत्र है, जो युद्धों को जन्म देती है। उन्हें नष्ट कर पारस्परिक मैत्री की सद्भावनाएँ तुम उत्पन्न करो। हे वरुण प्रभु ! तुम प्रजाओं के सत्यव्रतों की रक्षा करने वाले हो। तुम सब राष्ट्रों के मानवों के अन्दर व्रत-निष्ठा उत्पन्न करो, जिससे वे व्यक्तिगत और सामूहिक रुप में सत्य व्रतों को ग्रहण करें और उनके पालन में तत्पर होकर अपने-अपने राष्ट्र को ऊँचा उठाये तथा स्वप्न में भी युद्ध का नाम न लें। तभी युद्ध का विकट संत्रास दूर होगा, तभी विश्व में शान्ति की स्थापना होगी। भाईयो! जिस युद्ध में कुछ भी प्रिय नहीं होता उसकी कल्पना भी मन से निकाल दो, तभी तुम शान्ति से रह सकोगे और तभी विश्व में शान्ति व्याप्त हो सकेगी।

संस्कृतार्थ :- १. आजि युद्ध (निघं. २.१७) आजा आजौ। २. वृत्राण्यन्यः समिथेषु जिघ्नते, व्रतान्यन्यो अभिरक्षते सदा (ऋग्. ७.८३.९)

सम्पादकीय

"आखिर कब टूटेंगी ये बेड़ियाँ"

आज अपना देश विकासशील कहलाता है। विकसित होने के लिए न जाने कितने पायदान ऊपर चढ़ने की जरुरत है, किन्तु प्रान्तवाद, क्षेत्रवाद, नक्सलवाद, आतंकवाद आदि न जाने क्या-क्या वाद पैदा हो चुके है। सबसे बढ़कर एक वाद है "जातिवाद", इसी के साए में आज समाज का दम घूटता जा रहा है। जन्म के आधार पर वर्ण-व्यवस्था को स्वीकार करके समाज ने अपने आपको अनेकानेक संकटों में फंसा लिया है। समाज में व्याप्त अनेक रीति-रिवाज जैसे वंश-प्रथा, बाल-विवाह, बहुविवाह, विधवा विवाह निषेध, दहेज, अनमेल विवाह, देवदासी प्रथा, मृत्युभोज, श्राद्ध, आभूषण प्रथा, पर्दा-प्रथा, छुआछूत, ऊंच-नीच एवं स्त्री-स्वतन्त्रता पर बन्धन आदि कुप्रथाओं को यदि हम हटाने में समर्थ हो जायें तो समाज और देश की प्रगति की चाल अनेक गुना बढ़ सकती है।

वंश-प्रथा के अंध-विश्वास ने हमें अविवेकी और आलसी बना दिया है। सहारे की कामना क्यों? बिना बेटे के हमारा जीवन सफल नहीं होगा, हमारी मुक्ति सम्भव नहीं। कैसी थोथी कल्पना है? विधवा विवाह निषेध से एक ओर नैतिकता व चरित्र की दुर्गति हुई है तो दूसरी ओर साम्प्रदायिकता ने जन्म लेकर न केवल दंगे कराये हैं बल्कि देश के विभाजन को बढ़ावा दिया। पुरुष तो एक ही नहीं वरन् वृद्धावस्था में भी दो-चार शादी करने में गर्व का अनुभव कर सकता है। दहेज प्रथा जिससे समाज में अनैतिकता और चरित्रहीनता घर कर रही है। अनमेल विवाह हो रहे हैं, दहेज के अभाव या लोभ में नवविवाहितायें सताई जा रही है, उनकी हत्यायें हो रही है और उनका परित्याग किया जा रहा है। परिवार परिवार से जुड़ कर भी ऐसे दूर हैं कि उनका पूर्ण प्रेम व पारिवारिक घनिष्ठता एवं आनन्द शत्रुता में बदल रहा है।

आभूषण-प्रथा फिजूलखर्ची की सीमा को लांघे जा रही है। इससे समय की बरवादी तथा जान पर आने वाले जोखिम को हम पहचानने से आखिर क्यों इन्कार कर रहे हैं? अगर इस शौक को समाप्त नहीं किया गया तो समाज व परिवारों का सर्वनाश होता रहेगा, यह निश्चित है। नारियों में पर्दा प्रथा, किसी कवि के शब्दों में पुरुषों की अक्ल पर पर्दा है। क्या कभी पुरुष-समाज ने शान्ति से विचार किया है कि इससे हमारी

माँ-बहिनों, बेटियों व बहुओं पर क्या प्रभाव पड़ रहा है ? उनकी शिक्षा-दीक्षा पर अंकुश लग रहा है, विशेषतया ग्रामीण इलाकों में आज भी अशिक्षा का बोल-बाला है। उनका कार्य-क्षेत्र चूल्हा-चक्की तक ही सीमित रखा जार हा है। पर्दा-प्रथा के संदर्भ में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कहा था, हमारी स्त्रियों को वही स्वन्तन्त्रता क्यों नहीं मिली जो पुरुषों को है। वे बाहर निकल कर ठंडी हवा क्यों नहीं खा सकती ? चरित्र की पवित्रता बन्द कमरे की उपज नहीं है। अस्तु.... पर्दा प्रथा हमारी अपनी कमजोरी, अनिश्चय, तंगदिली और लाचारी के मूल कारणों में से एक है, इसलिए हमें एक जबरदस्त वार करके पर्दे को फाड़ डालना होगा। इसी से सबका कल्याण संभव होगा। धीरे-धीरे यह प्रथा अभी कम होती जा रही है।

२०१९ के चुनाव नतीजे इस बात के सुखद संकेत हैं कि भारतीय समाज अब जातिवाद से ऊपर उठकर राष्ट्रवाद को स्वीकार करता जा रहा है वरना जातिवाद के नाम पर इस देश ने बड़े-बड़े राजनीतिक संकट झेले हैं। उत्तर प्रदेश और बिहार जैसे बड़े राज्य जहां सत्ता की बागडोर जातीय समीकरण ही तय करती रही है। इस बार वहां पर जातिवाद राष्ट्रवाद के सामने बालू की महल की तरह धराशायी हो गया। जाति-पाति की पैनी धार ने हमारे समाज को लहू-लूहान कर दिया है और आज भी देश टुकड़ों-टुकड़ों में बंटता चला जा रहा है। अपने-अपने स्वन्तत्र राज्यों की मांग, जिसका फल प्रति दिवस बढ़ती हिंसा व परिवारों के परिवारों का खून, सामूहिक हत्यायें और देश के किसी भी भाग में भड़कने वाले दंगे क्या साम्प्रदायिकता को बढ़ावा नहीं देते ? सोंचे ! जातिवाद के नाम पर यह देश कितना गर्त में चला जा रहा है। राष्ट्र के राजनेता व कर्णधार क्यों नहीं सोचते ? पिछले दिनों तेलंगाना के गठन में जिस प्रकार की हिंसा देखने को मिली उसे किसी भी दृष्टि से उचित नहीं कह सकते। मृत्यु-भोज, श्राद्ध, तर्पण आदि समय व पैसों की बर्बादी है। यह जान कर भी लोग आज अनजान बन लकीर के फकीर क्यों बने बैठे है ? जिन माता-पिता को उनके जीवित रहते दो घूंट पानी भी नहीं पिलाया जाता, मरने के बाद उन्हीं के नाम पर भोज, गोदान, शैय्यादान एवं पिंडदान करना, यह कैसी समझदारी ? वह भी केवल ब्राह्मणों को ही क्यों दिया जाए ? भूखे, नंगे, लंगड़े-लूले, अंधे-बहरे, कोढ़ी एवं अपाहिजों को यह दान व भोजन क्यों नहीं दिया जाये? देश में आज करोड़ों स्त्री-पुरुषों व बच्चों को दो जून की रोटी भी नहीं मिल पा रही, रहने को मकान नहीं, तन को ढकने को कपड़ा नहीं और मृत्यु-भोज, शादी-ब्याह एवं उत्सवों में हजारों-लाखों की बर्बादी यह कैसी नादानी है ? जबकि देश का अधिकांश भाग सूखा-ग्रस्त है। क्यों नहीं हम प्रण लेते कि अब भविष्य में ये घटिया व अंधविश्वासी परम्परायें नहीं चलेंगी, नहीं चलेंगी।

शिक्षा, योग्यता, काबलियत आदि सद्गुणों के आधार पर मनुष्य को ऊंचा गिना जाए। व्यक्ति ऊंचा है, न कि जाति। जो व्यक्ति योग्य, विद्वान् है और सद्गुणी है, उसका जन्म चाहे किसी भी घराने में हुआ हो उसे संस्कारों, व्यवहारों व विद्वता की दृष्टि से ऊंचा मानना ही चाहिए। अनपढ़, अव्यवहारी, असंस्कारी को नीचा ही मानें और मानना चाहिए। भावना में बह कर एवं नेतागिरी की प्रतिष्ठा को प्रतिष्ठित करने की दृष्टि से यह दिखावा करना कि हम इन परम्पराओं व कुमतियों को दूर कर रहे हैं, इतने प्रयास कर रहे हैं कि यदि भावुकता के वशीभूत हो शोर मचाना, दिखावा व छलावा मात्र ही होगा। जब परिस्थितियां इसकी

जड़ों को मूल से उखाड़ने हेतु सक्रिय स्वरुप धारण करेगी तभी जन-जागृति के माध्यम से चन्द दिनों में इन्हें नष्ट करने में अवश्य सफलता मिलेगी। किसी प्रचलित मान्यता के विरुद्ध आप लाख तर्क देते रहें, उसे नैतिक दृष्टि से अनुचित बताते रहें, वह तब तक छोड़ी नहीं जावेगी जब तक कि नई परिस्थितियों में वह अप्रासंगिक नहीं हो जाती, प्रगति के पथ में सुस्पष्ट नहीं बन जाती। बिना रोटी-बेटी का नाता किए आप लाख चिल्लाते रहें आप न अछूतों का उद्धार कर सकते हैं, न जाति-पाति के बंधन तोड़ सकते हैं और न ही शुद्धि का आन्दोलन आगे बढ़ा सकते हैं। सभी अपना आदर्श कर्त्तव्य व अधिकार बनायें, ठोस कार्य करने का संकल्प लें कि हम रूढ़ियों को काटेंगे और कुमितियों को दूर करेंगे। इससे देश में व्याप्त जाति-पाति और छूआ-छूत समस्या निश्चित रुप से सुलझेगी। समाज में उनका प्रचार-प्रसार करेंगे तो वह दिन दूर नहीं जब प्रत्येक भारतीय अपने को भारतीय कहलाने में गर्व का अनुभव करेगा तथा भारत विश्व में जगद्गुरु की खोई प्रतिष्ठा को पुनः अवश्य प्राप्त करेगा।

जात-पात के परिणाम के कारण भारत में एक राष्ट्रीयता का बनना भी असम्भव हो गया है। यहां जितनी जातियां तथा उपजातियाँ हैं, उतने ही विभिन्न राष्ट्र है। जात-पात तोड़ कर समता और बन्धुता उत्पन्न करना ही आज युग-धर्म है। जो राष्ट्र इस युग-धर्म की अवहेलना करेगा वह नष्ट हो जायेगा। जात-पात के कारण हम सदा अपने को पराया बनाते आये हैं और अब तक भी बना रहे हैं। परन्तु किसी एक पराए को अपना नहीं बना सके। जात-पात राष्ट्रीय महारोग है जो सहस्त्रों वर्ष तक देश की दासता का कारण बना है। इसलिए इसको मिटाना परम कर्त्तव्य है। यदि हम चाहते हैं कि भारत की आने वाली पीढ़ियां जात-पात रुपी क्षयरोग का शिकार न बनें तो हमें अपने वर्तमान को इस महारोग से मुक्त करने का यत्न करना ही चाहिए। जाति-भेद के कारण हिन्दू समाज नारंगी के सदृश है। यह ऊपर से तो एक प्रतीत होता है परन्तु ऊपर का छिलका फटते ही भीतर अलग-अलग फाँके पड़ी है। पाकिस्तान के निर्माण के लिए अंग्रेजों या जिन्ना को कोसने के स्थान पर हिन्दुओं को अपनी जात-पात को ही कोसना चाहिए। अभी अभी दो साल पूर्व महानगरी मुम्बई में किसी महिला को महज मुस्लिम होने के कारण फ्लेट नहीं दिया गया, इतना ही नहीं आजतक दूरदर्शन समाचार के टीम ने इसकी तहकीकात कराई तो यह बात भी सामने आई कि मुस्लिम क्षेत्र में हिन्दू परिवार के लिए भी किराये में मकान मुम्बई में नहीं मिल पाया। यह सब क्या है, हम कैसे भारत में जी रहे हैं, क्या इसी का नाम वसुधैव कुटुम्बकम् है।

अस्तु ! पाठकों से निवेदन करूंगा कि आपस में सब मिलकर ऐसा नया समाज बनायें, जो अन्धविश्वासों, थोथी परम्पराओं व सामाजिक कुमतियों का समूल नाश कर ऊंच-नीच व जात-पात की दीवारों को तोड़ें, स्नेह व सहयोग से परस्पर मन को जोड़ें। प्रेमालिंगन में बंध वैमनस्य को त्यागे और मानव-प्रेमी बन मानव-मात्र को एक समझ अपनायें। हिंसा को छोड़ अहिंसा से समस्त विश्व में शान्ति स्थापित कर विश्व बन्धुत्व की भावना को साकार करें। अपने पराये के भावों को भूलाकर जाति, देश, प्रान्तीयता व भाषा की भावना को परे फैंक मानवता को सच्चा पथगामी बनायें। इसी में हमारा व मानव-मात्र का कल्याण है।

- आचार्य कर्मवीर

विचारात्मक

'वेद- पारिवारिक सहृदयता की एकता का सन्देश देते हैं'

- मनमोहन कुमार आर्य

वेदाध्ययन से जीवन का कल्याण

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद ईश्वर प्रदत्त होने के कारण ही सब सत्य विद्याओं से युक्त सर्वांगपूर्ण ज्ञान है। अतः वेदों को पढ़ना व दूसरों को पढ़ाना व प्रचार करना सब विचारशील मनुष्यों का परम कर्त्तव्य और धर्म है। परिवार को सुसंगठित बनाने से सब लोगों का सुख व समृद्धि बढ़ती है और स्वर्ग के समान वातावरण उत्पन्न होता है। अतः वेदों की शिक्षा का परिवार में सदुपयोग करना चाहिए एवं विरोधी विचारों से बचना चाहिए। अथर्ववेद का ३/३०/१ मन्त्र परिवार में हृदयों व मनों की एकता पर प्रकाश डालता है। यह एक प्रकार से सुखी गृहस्थ, सुखी परिवार तथा धरती को स्वर्ग बनाने का आधार है। इस मन्त्र का अध्ययन करने व इसकी शिक्षाओं को आचरण में लाने से इन उद्देश्य की पूर्ति होती है। आईये, मन्त्र का पाठ करते हैं - **ओ३म् सहृदयं सांमनस्यमविद्वेषं कृणोमि वः। अन्यो अन्यमभि हर्यत वत्सं जातामिवाध्न्या ॥** *इस मन्त्र का शब्दार्थ व पदार्थ इस प्रकार है। हे गृहवासियों! तुम्हारे लिए सहृदयता अर्थात् परस्पर सहानुभूति तथा प्रेमपूर्ण हृदय का, मन अर्थात् विचारों तथा संकल्पों की एकता का, तथा परस्पर निर्वैरता का मैं परमात्मा उपदेश करता हूँ। एक दूसरे की चाहना किया करो, उत्पन्न हुये बछडे की जैसे गौ चाहना करती है।*

इस मन्त्र में परमपिता परमात्मा पहला उपदेश देते हैं कि हे गृहवासियों! तुम एक दूसरे के साथ सहृदयता का व्यवहार करो अर्थात् परस्पर सहानुभूति और प्रेम का व्यवहार करो। दूसरे के दुःख को दूर करना और उसे सुख पहुंचाना, यह सहृदयता का भाव है। सहृदयता का अर्थ है हृदय को एक हो जाना। मानों गृहवासियों के देह तो भिन्न-भिन्न है परन्तु उन सब में हृदय एक है- इस भावना को सहृदयता की भावना कहते हैं। दूसरे को दुःख हुआ तो समझना चाहिए कि यह मेरे हृदय को ही दुःख हुआ है। यह भावना सहृदयता की भावना है।

हमारे प्रेरणा के स्रोत परमात्मा हमें दूसरा उपदेश सांमनस्य शब्द से देते हैं। सांमनस्य शब्द का अर्थ है मन की एकता का होना। मन प्रतिनिधि है विचारों का और संकल्पों का। विचारभेद तथा संकल्पभेद परस्पर के विरोध तथा विषमता के कारण बन जाते हैं। जहां हृदय मिले हुए होते हैं वहां विचारों तथा संकल्पों की विषमता भी कम हो जाती है, वहां एक दूसरे के विचारों और संकल्पों का उचित मान तथा आदर करने की ओर झुकाव रहता है। गृहवासियों में एक ओर जहां परस्पर सहृदयता का भाव होना चाहिए। इससे गृहस्थ स्वर्गधाम बनता है और गृहस्थ से रोग, शोक, दुःख व अशान्ति दूर भाग जाते हैं।

जिन परिवारों में यह दो भावनायें होती हैं वहां निर्वैरता का राज्य व वातावरण बन जाता है। आपस में

वैर का द्वेष का भाव ऐसे व्यक्तियों में जड़ नहीं पकड़ता जहां कि सहृदयता और सांमनस्य के बीज बोए गये हों। गृहस्थ के प्रत्येक सदस्य को चाहिए कि वह एक दूसरे के संग और साथ की उग्र कामना करें। एक दूसरे से मिलने-जुलने के उत्कट अभिलाषी हों। इससे परस्पर प्रेमभाव बढ़ता रहता है और परस्पर न मिलने-जुलने से प्रेम की मात्रा कम होती है। इस उग्रकामना के सम्बन्ध में गाय का दृष्टान्त वेद मन्त्र में दिया गया है। गाय अपने नवजात बछड़े के साथ बहुत प्रेम करती है। वह उसके पास रहने की उग्रकामना करती है। सभी गृहवासियों को इसी प्रकार एक दूसरे के साथ रहने के लिए उग्र कामना करनी चाहिए। वेदमन्त्र में अघ्न्या पद आया है जिसका अर्थ है- हनन न करने योग्य अर्थात् मारने वा वध न करने योग्य। इससे यह ज्ञात होता है कि परम पिता परमात्व अपने ज्ञान वेद के माध्यम से गाय के हनन अर्थात् गोधात का निषेध करते हैं।

वेदों की उपर्युक्त शिक्षा देश, काल में सीमित न होकर सार्वभौमिक एवं सार्वकालिक है। यह एक नमूना है। यदि हम वेदों का स्वाध्याय करेंगे तो हम वेदों में बहुमूल्य रत्नों को प्राप्त कर सकते हैं। वेदों की सर्वोपरि महत्ता के कारण हमारे तत्वेत्ता ऋषियों ने वेदों को ईश्वरीय ज्ञान स्वीकार किया और इसे मानवमात्र के लिए कल्याणप्रद जानकर इसका प्रचार व प्रसार समस्त भूमण्डल में करने का विधान है।

वेदों का अध्ययन धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की प्राप्ति कराता है। संसार में वेदों के समान मनुष्यों के लिए उपयोगी व लाभप्रद अन्य कोई ग्रन्थ नहीं है। इस तथ्य को जानकर विश्वनाथ वेदोपाध्याय जी की पुस्तक वैदिक गृहस्थाश्रम से चुना है। इसकी समस्त सामग्री भी उनकी पुस्तक से प्रचारार्थ ली हैं। उनका आभार एवं कृतज्ञता व्यक्त करते हैं।

पता : १९६, चुक्खूवाला-२, देहरादून-२४८००१

तनाव से बचने के उपाय

१. प्रातःकाल सूर्योदय के पूर्व उठकर दिनचर्या करना।

२. प्रातःकाल खुली हवा में भ्रमण करना तथा आसन-व्यायाम करना।

३. प्रातःकाल के शांत, स्वच्छ वातावरण में योग-ध्यान, प्राणायाम का अभ्यास करना।

४. अपनी दिनभर की दिनचर्या यथा भोजन, विश्राम आदि को सुव्यवस्थित करना।

५. वाणी में मधुरता लाना तथा परिवारजनों, पड़ोसियों, मित्रों एवं सहकर्मियों आदि के साथ मधुर संबंध बनाये रखना।

६. ईमानदारी पूर्वक एवं सावधानी पूर्वक धंधा, व्यापार, नौकरी आदि कर्त्तव्य कर्म करना।

७. झूठ, छल, कपट, निंदा, चुगली, कठोर वाणी, ईर्ष्या-क्रोध आदि को त्याग कर सदा सत्य बोलना।

८. व्यवहार में विनम्रता, प्रेम, मधुरता, निरभिमानता आदि को धारण करना।

९. आलस्य-प्रमाद आदि दोषों को दूर कर पुरुषार्थी बनना।

१०. अपनी त्रुटि-भूल को स्वीकार कर उसे दूर करने का प्रयत्न करना।

११. अपने कार्यों की सूची बनाना तथा मुख्य कार्य पहले और गौण कार्य बाद में करना।

१२. किसी भी व्यक्ति वस्तु या घटना के विषय में यथार्थ जानकारी प्राप्त किये बिना मिथ्याधारणा न बनाना।

१३. अपने माता-पिता, गुरु-आचार्य, पालक के आदर्शों के अनुकूल चलना कभी इनसे झगड़ा न करना।

१४. ऋषियों, मुनियों, महापुरुषों तथा सत्यशास्त्रों के अनुसार जीवन पथ पर चलना।

१५. अनावश्यक वस्तुओं एवं विचारों का संग्रह न करना।

– स्वामी शान्तानन्द सरस्वती
संत ओधवराम वैदिक गुरुकुल, भवानीपुर,
ता. अबडासा, कच्छ (गुजरात)

प्रासङ्गिक तर्क क्षमता बढ़ेगी-तो सुधरेगा रिजल्ट

- जे.एस. राजपूत, एनसीईआरटी के पूर्व डायरेक्टर

देश में लगभग चालीस स्कूल बोर्ड है, जिसमें राष्ट्रीय स्तर पर सीबीएसई तथा आईसीएसई की अपनी प्रतिष्ठा है। फिर लगभग हर राज्य का अपना स्कूल बोर्ड है। विगत वर्ष मध्यप्रदेश स्कूल शिक्षा बोर्ड के कक्षा दस के परिणामों के अनुसार करीब पचास प्रतिशत बच्चें ही सफल हो पाए हैं। अधिकतर राज्य बोर्ड के नतीजे कमोबेश ऐसे ही रहते हैं। दूसरी तरफ आईसीएसई की परीक्षा में ९८ फीसदी बच्चे सफल हुए हैं। इतना बड़ा अंतर क्यों होना चाहिए? यह सवाल हर साल उठता है, लेकिन कुछ समय बाद भुला दिया जाता है।

सवाल केन्द्रीय व राज्य बोर्ड का नहीं है। सवाल है गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का। राज्य बोर्ड के परिणामों का सूक्ष्म विश्लेषण करें तो पाएंगे कि गणित, अंग्रेजी और विज्ञान विषयों में विद्यार्थी अपेक्षा के अनुरुप प्रदर्शन नहीं कर पाते। शिक्षा से जुड़ी कई बातें हैं ऐसे आधारभूत ढांचा, गुणवान शिक्षक और उचित पाठ्यसामग्री किन्तु पहले हमें देखना होगा कि मौजूदा पाठ्यक्रम में ऐसे कौन-से परिवर्तन जरुरी है, जो नतीजों को सुधारने में मदद कर सकते हैं। जहां तक गणित के अध्ययन-अध्यापन का सवाल है, यह व्यापक समस्या है। बच्चे में तर्क शक्ति के विकास का सारा दारोमदार गणित पर छोड़ दिया गया है। आप प्राचीनकाल के अध्ययन के विषय देखें तो उसमें एक विषय होता था, तर्कशास्त्र यानी लॉजिक। आधुनिक शिक्षा में इसका अभाव है। प्रतियोगी परिक्षाओं में चित्रों, संख्याओं व वास्तविक जीवन की परिस्थितियां देकर तर्क की परीक्षा ली जाती है, लेकिन यह बाद की बात है। क्या हमें स्कूल के स्तर पर तर्क को विषय के रुप में शामिल नहीं करना चाहिए। तर्क शक्ति बढ़ेगी तो गणित को समझना आसान होगा। उत्तर रटने की प्रवृत्ति पर भी लगाम लगेगी।

दूसरा सवाल भाषा का है। मातृभाषा में बच्चे आसानी से पास हो जाते हैं, लेकिन यहां भी प्रतिशत का गिरना चिंतनीय है। अंग्रेजी तो खैर विदेशी भाषा है। त्रिभाषा फार्मूले में हमने जो भी भाषाएं चुनी है, उसे पढ़ाने में गुणवत्ता पर जोर देना चाहिए। भाषा विचार-आइडिया को समझने और व्यक्त करने का जरिया है। जाहिर है, भाषा की जितनी अच्छी समझ होगी, उतनी अच्छी तरह बच्चा विषयों को समझ सकेगा और परीक्षा में व्यक्त भी कर सकेगा। कविताएं याद करने और कुछ पाठों के उत्तर देने से यह क्षमता नहीं आती। इसके लिए साहित्य का अध्ययन जरुरी है।

फिर विषयों के प्रति भेदभाव की प्रवृत्ति रहती है। गणित-विज्ञान जैसे विषयों को महत्वपूर्ण मान लिया जाता है और भाषा अध्ययन को गौण स्थान दिया जाता है। बच्चों में यह भावना भरनी होगी कि ज्ञान की साधना में हर विषय का अपना अलग महत्व है। भाषा से समझ से सूक्ष्म और तटस्थ निरीक्षण की क्षमता आती है। सभी विषयों को समान महत्व देने से बच्चे का ज्ञान की दुनिया में सर्वांगीण विकास होगा।

इसके अलावा पिछले तीन-चार वर्षों से कक्षा आठ तक सभी पास की नीति ने बच्चों के उपलब्धि स्तर को गिराने में ही योगदान दिया है। किसी भी स्तर पर परीक्षा की कसौटी के महत्व से इन्कार नहीं किया जा सकता। बच्चों को तनाव से बचाने का यह तरीका व्यावहारिक नहीं है। ये बच्चे जब दसवीं कक्षा की परीक्षा में बैठते हैं तो अपने को असहज पाते हैं। फिर एक तरफ नकल करने की प्रवृत्ति उभरती है तो दूसरी तरफ नकल कराने वाले गिरोह भी पैदा हो जाते हैं। ऐसे अधिकांश बच्चे उन स्कूलों के होते हैं जहां हर प्रकार की कमी का होना अब सामान्य मान लिया गया है। क्या सरकारें यह नहीं जानती है कि जब तक वे पैरा-टीचर्स जैसी व्यवस्था समाप्त नहीं करेंगे, समाज के कमजोर तबके के बच्चे आगे नहीं बढ़ पाएंगे? शिक्षा को तो गांधी जी ने आशा की एक मात्र किरण माना था जो भारत के

लोगों को स्वराज आने के बाद खुशी दे पाएगी। जब अध्यापक सक्षम न हो, बच्चों के प्रति प्रतिबद्ध न हों, असुरक्षा ग्रस्त हों, अनावश्यक भार उस पर डाला गया हो, तब शिक्षा में गुणवत्ता की अपेक्षा करने का कोई औचित्य नहीं है। फेल होने वाले विद्यार्थियों की चिंता न बोर्ड करता है और न सरकार। फिर जो पास हुए हैं उन्होंने कितने जीवन कौशल सीखे हैं, कितने मानव-मूल्यों को आत्मसात किया है, समाज के प्रति अपने उत्तरदायित्वों को कितना स्वीकार किया है, इसका कोई अनुमान वर्तमान परीक्षा पद्धति के द्वारा नहीं लगाया जा सकता। अधिकांश पालक बच्चों को राह दिखाने के नाम पर उन पर अपनी इच्छायें थोपने में तनिक भी हिचकते नहीं है। जाने-अनजाने वे भूल जाते हैं कि बच्चे की अपनी रुचियां-अभिरुचियां स्वतः ही आगे बढ़ाती है और उन पर कोई अन्य अपनी इच्छायें थोपे तो परिणाम निराशाजनक ही होगा। दसवीं कक्षा तक अनेक बच्चे अपनी विशेष रुचि के क्षेत्र प्रायः निर्धारित करने लगते हैं। यदि कोई संगीत या खेल में रुचि दिखाता है, उसमें बहुत आगे जाने की क्षमता दर्शाता है, उसे प्रोत्साहन मिलने के स्थान पर घर पर झिड़की ही मिलेगी और हो सकता है कि उसे मेडिकल या इंजीनियरिंग के लिए कोचिंग क्लासेज में जाकर अपना समय नष्ट करना पड़े।

वे भूल जाते हैं कि आज के सोलह साल के तरुण और पचास साल पहले के उसके समवयस्क को मिली दुनिया में जमीन-आसमान का अंतर है। ज्ञान, अनुभव तथा सीखने के नए-नए स्रोत उपलब्ध है और उन तक पहुंचना आसान हो गया है। २१ वीं सदी के लिए शिक्षा के स्वरुप के निर्धारण के लिये युनेस्कों द्वारा बनाए गए डिलोर्स आयोग ने अपने प्रतिवेदन का शीर्षक लर्निंग द ट्रेजर विदिन रखा था। यह भी स्पष्ट करता है कि अध्यापक और पालक केवल सहायता कर सकते हैं। ज्ञान के खजाने की बच्चे की अपनी खोज में। व्यवस्था चाहे तो दिल्ली के कोटला रोड पर स्थित नेशनल बाल भवन जैसे कुछ गतिविधियां देश के हर स्कूल में आयोजित हो सकती है।

माता-पिता अनेक बंधन लगाते हैं। खेल-कूद को अनावश्यक मान लिया जाता है। एक अन्य समस्या भी तेजी से उभरी है। अब मनोरंजन के साधन हर तरफ उपलब्ध है। वे बच्चों को आकर्षित करते हैं। अतः जब तक स्कूल का वातावरण नहीं बदलेगा, उन्हें कक्षों में जबर्दस्ती रोक पाना संभव नहीं होगा। यह स्वीकार करना ही होगा कि स्तरीय अध्ययन-अध्यापन के लिए पूर्ण-प्रशिक्षित अध्यापक की उपस्थिति अत्यावश्यक है और यह काम पैरा-टीचर्स के द्वारा संभव नहीं है। सबसे उत्तम मूल्यांकन तो वही अध्यापक कर सकते हैं, जिसने बच्चे को पढ़ाया हो। यहां तक पहुंचाने में हमें समय लगा सकता है मगर नियमित अध्यापकों की उचित संख्या में नियुक्ति करना और उनके प्रशिक्षण संस्थानों को सही ढंग से चलाने की व्यवस्था तो तुरंत ही की जा सकती है। शिक्षा से भविष्य की पीढ़ियों का चरित्र निर्माण तभी हो सकेगा जब वर्तमान व्यवस्था के चरित्र पूरी तरह बदल जाए।

विनाश का क्या मार्ग है ?

एक बार राजा भोज ने धर्म सभा में विद्वानों से पूछा विनाश का मार्ग क्या है ? धर्माचार्य ने उस समय तो उत्तर नहीं दिया लेकिन राजा को प्रतीक्षा के लिए कहा। एक बार प्रातःकाल राजा भोज ने अद्भुत दृश्य देखा। एक संन्यासी हाथ में भिक्षा पात्र लिए खड़ा है, पात्र में मांस के टुकड़े देखकर राजा ने आश्चर्य से पूछा हे संन्यासी! तुम मांस का भी सेवन करते हो। संन्यासी ने उत्तर दिया राजन शराब के बिना मांस का क्या आनंद ? राजा ने फिर कहा कि तुम शराब भी पीते हो ? तो संन्यासी ने कहा कि शराब का सेवन तो मैं वेश्याओं के साथ करता हूं। राजा ने पूछा कि वैश्याओं के लिए धन कहां से लाते हो ? सन्यासी ने कहा कि जुआ या चोरी करके। राजा ने फिर साश्चर्य कहा कि अरे तुम जुआ भी खेलते हो और चोरी भी करते हो ? संन्यासी ने कहा कि महाराज यही तो विनाश का मार्ग है। यह कहकर संन्यासी वेषधारी धर्माचार्य ने अपना आवरण हटा लिया और इससे राजा को अपने प्रश्न का उत्तर मिल गया।

लेखिका - वंदनाप्रिय आर्य

जी ने स्वर्ग का अर्थ भी मोक्ष, सुख किया है। **स्वर्गलोकेः** (यजु.२३-२०) सुखमय लोक। **सुकृतस्य लोके** (यजु.१५-५०) पुण्य कर्मों से अर्जित लोक। **येजस्वः स्तभितं येन नाकः** (यजु. ३२-६) यहां पर स्वः का अर्थ सुख तथा नाकः का अर्थ सब दुःखों से रहित मोक्ष किया है। महर्षि जी ने बहुत से स्थानों पर **अमृतम्** का अर्थ भी (यजु. ३२-१०,२५-१३) मोक्ष सुख किया है। अमरकोश के अनुसार **स्वरव्ययं स्वर्गनाकत्रिदशालयाः। सुरलोको द्यौर्दिवो द्वेस्त्रियां त्रिविष्टकम्** ॥ (१६) अर्थात् स्वः, अव्यय, स्वर्ग, नाक, त्रिदिवन, त्रिदशालय, सुरलोक, द्यौ, दिवः और त्रिविष्टम् आदि शब्द एक ही पदार्थ के वाचक है। स्वर्ग किसे प्राप्त होता है इस सम्बन्ध में ऋग्वेद में आया है - **अविन्दद् दिवो.... इन्द्रः परीवृता द्वार इषः परीवृताः** ॥ (ऋ. १-१३०-३) ज्ञानी पुरुष शरीरस्थ प्रभु का दर्शन करता है, जितेन्द्रिय बनकर वह प्रभु-प्रेरमा को सुनता है और स्वर्गद्वारों को खालने वाला होता है। **एकस्मै स्वाहा द्वाभ्यांस्वाहा स्वाहैकशाताय स्वाहा व्युष्टयै स्वाहा स्वर्गाय स्वाहा** ॥ (२२-३४) एक परमेश्वर की प्राप्ति के लिए स्तुति, प्रार्थना, उपासना और पुरुषार्थ करो। मन और जीवात्मा दोनों की शुद्धि के लिए स्तुति, प्रार्थना, उपासना और पुरुषार्थ करो। शतवर्ष की आयु प्राप्त करने के लिए पुरुषार्थ करो। एक सौ एक प्रणव-जप और गायत्री-जप के लिए तत्पर हो। अन्धकार दूर करके प्रकाश की प्राप्ति के लिए प्रयास करो। स्वर्ग प्राप्ति के लिए प्रयास करो।

महाभारत में धर्मराज जब भीष्म पितामह से लोक-परलोक के कल्याण की प्राप्ति हेतु उपाय पूछते हैं तो पितामह उनसे कहते है - **धर्म एव कृतः श्रेयानिहलोके परत्र च। ... प्राप्नोति ब्रम्हणः स्थान तत्परं प्रकृतेर्ध्रुवम्** ॥ (श.प.) **प्राणी धर्मसमायुक्तो गच्छेत स्वर्गगतिं पराम्। तथैववाधर्मसंयुक्तो नरकं चोपपद्यते** ॥ (अनु.प.) राजन्! मननशील लोगों का कथन है कि धर्म का विधिपूर्वक अनुष्ठान् किया जाए तो वह इहलोक और परलोक में कल्याणकारी होता है। धर्ण से बढ़कर श्रेय का उत्तम साधन अन्य कोई नहीं है। धर्ण को जानकर उसका आश्रय लेने वाला मनुष्य स्वर्ग में गौरव पाता है। शास्त्रों में जो सत्यं वद, धर्म चर-सत्य बोलों धर्ण का आचरण करो, दान दो, यज्ञ करो आदि वाक्यों द्वारा मनुष्यों का कर्त्तव्य-विधान किया गया है। वहीं धर्म का लक्षण है। मनो-विग्रह, क्षमाशीलता, धैर्य, तेज, सन्तोष, सत्य बोलना, लज्जा, अहिंसा, दुर्व्यसनों का अभाव और दक्षता-ये सब सुख के दोने वाले हैं। मनुष्यों को जीवन भर पाप या पुण्य कर्मों में आसक्त नहीं होना चाहिए। बुद्धिमान मनुष्य को अपने मन को परमात्मा के ध्यान में लगाने का प्रयत्न करना चाहिए। धर्माचरण से श्रेय की वृद्धि होती है और अधर्म करने से मनुष्य का विनाश होता है। विषयासक्त मनुष्य प्रकृति को प्राप्त होता है और विरक्त आत्मज्ञान प्राप्त करके मुक्त हो जाता है। जो मनुष्य मितभोजी और जितेन्द्रिय होकर मोक्ष-प्राप्ति में सहायक धर्मों के पालन में संलग्न रहता है, वही प्रकृति से परे अविनाशी ब्रह्मपद को प्राप्त होता है। धर्मयुक्त प्राणी को स्वर्ग में श्रेष्ठ गति प्राप्त होती है और अधर्मपारायण जीव नरक में पड़ता है।

आचक्षेऽहं मनुष्येभ्यो देवेभ्यः प्रतिसंचरन्। .. सत्येन चाग्निर्दहति स्वर्गः सत्ये प्रतिष्ठितः ॥ (शा.प.) मैं चारों ओर घूमकर मनुष्यों और देवताओं से कहा करता हूं कि जैसे जहाज समुद्र से पार होने का साधन है, उसी प्रकार सत्य ही स्वर्गलोक में पहुंचने की सीढ़ी है। अज्ञान ने इस लोक को आवृत कर रखा है। आपस में डाह होने के कारण सत्यस्वरुप प्रकाशित नहीं होता। मनुष्य लोभ के कारण मित्रों को त्याग देता है और आसक्ति-दोष के कारण स्वर्ग में नहीं जा पाता। सत्य से ही वायु चलती है, सत्य से सूर्य तपता है, सत्य से ही अग्नि जलती है और सत्य पर ही स्वर्गलोक प्रतिष्ठित है।

अध्यापकः परिक्लेशादक्षयं फलमश्नुते। .... शूद्रः स्वकर्मनिरतः स्वर्ग शुश्रूषयार्च्छति ॥ (अनु.प.) शिष्यों को वेद पढ़ाने वाला अध्यापक कष्ट सहन करने के कारण अक्ष्य फल का भागी होता है। अग्नि में विधिपूर्वक हवन करके ब्राह्मण हवन करके ब्राह्मण ब्रह्मलोक में प्रतिष्ठित होता है। जो वेदों का अध्ययन करके न्यायपरायण शिष्यों को विद्यादान करता है और गुरु के कार्यों की प्रशंसा

करने वाला है, वह स्वर्गलोक में प्रतिष्ठित होता है। वेदाध्ययन, यज्ञ तथा दान देने में तत्पर रहने वाला और युद्ध में दूसरों की रक्षा करने वाला क्षत्रिय भी स्वर्गलोग में पूजित होता है। अपने कर्त्तव्य पालन में लगा हुआ वैश्य दान देने से उच्चपद को प्राप्त होता है। अपने कर्म में तत्पर रहने वाला शूद्र सेवा के द्वारा स्वर्ग में जाता है। **सत्यवन्तः स्वर्गलोके मोदन्ते भरतर्षभ। ... न स पश्येत नरकं गुरुशुश्रूयाऽऽत्मवान्।** (अनु.प.) सत्यवादी स्वर्गलोक में आनन्द भोगते हैं परन्तु इन्द्रिय-संयमी उस सत्य के फल की प्राप्ति मं कारण है। यह बात मैने हृदय से कही है। जिसने अपने मन को वश में करके विनयशील बना दिया है, वह निश्चय ही स्वर्गलोक में सम्मानित होता है। पृथिवीनाथ! अब तुम ब्रह्मचर्य के गुण सुनो। जो इस संसार में जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त ब्रह्मचारी रहता है, उसके लिए कुछ भी दुर्लभ नहीं है, इस बात को जान लो। जो मनुष्य माता-पिता, बड़े भाई, गुरु और आचार्य की सेवा करता है और उनके गुणों में कभी दोषदृष्टि नहीं करता, उसको मिलने वाले फल को जान लो-उसे स्वर्गलोक में सबके द्वारा सम्मानित स्थान प्राप्त होता है। मन को वश में रखने वाला वह मनुष्य गुरुसेवा के प्रभाव से कभी नरक का दर्शन नहीं करता। पितामह जी पृथिवीदेव द्वारा श्रीकृष्णजी को दिए गए उत्तर को उद्धृत करते हुए कहते हैं -

सदा यज्ञेन देवाश्च सदाऽऽतिथ्येन मानुषाः।
... इहलोके यशः प्राप्य प्रेत्य स्वर्गमवाप्स्यसि॥

(अनु.प.) गृहस्थ को सदा ही देवताओं, पितरों, ऋषियों और अतिथियों का पूजन एवं सत्कार करना चाहिए... प्रतिदिन यज्ञ के द्वारा देवताओं का, अतिथि-सत्कार के द्वारा मनुष्यों का (श्रद्धापूर्वक सेवा द्वारा पितरो-माता, पिता आदि का) तथा वेदों का नित्य स्वाध्याय करके पूजनीय ऋषि-महर्षियों का यथाविधि पूजन और सत्कार करना चाहिए। इसके पश्चात् भोजन करना उचित है। प्रतिदिन भोजन से पूर्व अग्निहोत्र और बलिवैश्वदेव यज्ञ करे। माता-पिता की प्रसन्नता और तृप्ति के लिए प्रतिदिन अन्न और जल आदि द्वारा उनकी सेवा करें। भोजन तैयार होने पर उसमें से अन्न लेकर विधिपूर्वक बलिवैश्वदेव यज्ञ करना चाहिए। गृहस्थ को सदा यज्ञशेष का ही भोजन करना चाहिए। कुत्तो, चाण्डालों और पक्षियों के लिए भूमि पर अन्न रख देना चाहिए। यह बलिवैश्वदेव नाक यज्ञ है। इसका प्रातः और सायंकाल अनुष्ठान किया जाता है। नरेश्वर! इस गृहस्थ धर्म का पालन करते रहने पर तुम इस लोक में सुयश और मरने पर स्वर्ग अर्थात् सुखविशेष को प्राप्त कर लोगे। इसी पर्व में धर्मराज प्रश्न करते है कि मनुष्य बन्धन-मुक्त होकर स्वर्ग को कैसे प्राप्त होते हैं? इसके उत्तर में पितामह बड़े विस्तार के साथ कहते है - **सर्वभूतदयावन्तो विश्वास्याः सर्वजन्तुषु। ...... नित्यं ते नराः स्वर्गगामिनः॥** जो सब प्राणियों पर दया करने वाले, सब जीवों के विश्वासपात्र एवं हिंसामय आचरणों को त्याग देने वाले हैं, वे मनुष्य स्वर्ग में जाते हैं। जो दूसरे के धन पर ममता नहीं रखते, परस्त्री से सदा दूर रहते हैं और धर्म से प्राप्त अन्न का ही भोजन करते हैं, वे मनुष्य स्वर्ग में जाते हैं। जो मनुष्यों पर स्त्रियों को माता, बहिन और पुत्री के समान समझकर तदुरुप व्यवहार करते हैं, वे स्वर्गलोक में जाते हैं, जो सदा अपने ही धन से सन्तुष्ट रहकर चोरी आदि से पृथक् रहते हैं और जो अपने ही भाग्य पर भरोसा रखकर जीवन-निर्वाह करते हैं, वे मनुष्य स्वर्गगामी होते हैं। जो अपनी ही स्त्री में अनुरक्त रहकर ऋतुकाल में ही उसके साथ समागन करते हैं और ग्राम्य सुख भोगों में आसक्त नहीं होते। जो अपने सदाचार के द्वारा सदा ही परस्त्रियों की ओर अपनी आंख बन्द किए रहते हैं, वे जितेन्द्रिय और शीलपरायण मनुष्य स्वर्गलोग मं जाते हैं। जो हंसी-मजाक का सहारा लेकर भी अपने या दूसरे के लिए कभी झूठ नहीं बोलते, जो आजीविका अथवा धर्म के लिए और स्वेच्छाचार से भी कभी असत्यभाषण नहीं करते, जो स्निग्ध, मधुर, बाधारहित, पापशून्य और स्वागत-सत्कार के भाव से युक्त वाणी बोलते हैं, जो किसी की चुगली नहीं करते और कभी मुख से किसी के प्रति रूखी, कड़वी और निष्ठुरतापूर्ण बात नहीं निकालते, जो दो मित्रों में फूट डालने वाली चुगली की बातें नहीं करते, सत्य और मैत्रीभाव से युक्त वचन बोलते हैं, जो मनुष्य दूसरे से तीखी बातें बोलना छोड़ देते हैं, सब प्राणियों के प्रति समान भाव रखते हैं और जितेन्द्रिय होते हैं, जिनके मुख से कभी शठतापूर्ण बात नहीं निकलती, जो विरोधयुक्त वाणी का परित्याग कर देते हैं और सदा सौम्य वाणी बोलते

हैं, जो क्रोध में आकर भी हृदय दुःखानेवाली बात मुंह से नहीं निकालते, अपितु क्रुद्ध होने पर भी सान्त्वनापूर्ण वचन बोलते हैं, वे लोग स्वर्ग में जाते हैं।

जब दूसरे का धन निर्जन वन में पड़ा हुआ दिखाी दे, उस समय भी जो मनुष्य उसे उठाने के लिए मन से भी कामना नहीं करते, गांव अथवा घर के एकान्त स्थान में पड़े हुए पराए धन का जो कभी अभिनन्दन नहीं करते, जो मनुष्य एकान्त में प्राप्त हुई कामासक्त पर-स्त्रियों के साथ मन से भी अन्याय करने का विचार नहीं करते, जो सबके प्रति मैत्रीभाव रखकर सबसे मिलते और शत्रु एवं मित्र दोनों को सदा समान हृदय से अपनाते हैं, जो शास्त्रज्ञ, दयालु, पवित्र, सत्यप्रतिज्ञ और अपने ही धन से सन्तुष्ट रहते हैं, जिनके मन में किसी के प्रति बैर नहीं है, जो किसी कार्य को करते आसक्तियुक्त नहीं होते, जो मैत्री भाव से पूर्ण हृदयवाले तथा सम्पूर्ण प्राणियों के प्रति सदा ही दया का भाव रखने वाले है, जो श्रद्धालु, दयालु, शुद्ध, शुद्धजनों के प्रेमी तथा धर्म और अधर्म के ज्ञाता है, वे मनुष्य स्वर्गगामी होते हैं। महाभारत के उद्योगपर्व में लौकिक सुखों की बहुत सुन्र तथा सार्थक चर्चा करते हुए कहा है -

अर्थागमो नित्यमरोगिता च, प्रिया च भार्या प्रियवादिनी च।... वश्यश्च पुत्रोऽर्थकरी च विद्या षड् जीवलोकस्य सुखानि राजन्॥ हे राजन्! धन की आय, सदा स्वस्थ रहना, प्रिय आचरण वाली और प्रिय वचन बोलने वाली पत्नी, आज्ञाकारी पुत्र, धन पैदा करने वाली जीविका और उत्तम ज्ञान से ये छः इस मनुष्य लोक के सुख है। हे राजन्! स्वास्थ्य, ऋणरहित होना, व्यर्थ घर से बाहर परदेश में न रहना, सत्पुरुषों की संगति, अपने विश्वास की जीविका और निर्भय होकर निवास करना ये छः इस लोक के सुख है। आगे कही जाने वाली आठ वस्तुएं हर्ष का सार है और ये ही बर्तमान जीवन के सुख है। वे ये है - मित्रों के साथ मेलमिलाप, धन की पुष्कल प्राप्ति, पुत्र का आलिंगन, दाम्पत्य-जीवन में निपुणता, समय पर प्रिय वचन बोलना, अपने वर्ग के लोगों में विशेष उन्नति करना, अभीष्ट पदार्थ की प्राप्ति और जनसभा में सम्मान पाना। जो व्यर्थ के प्रदेशवास, पापियों से मेलमिलाप, परस्त्रियों से सम्बन्ध, आडम्बर, अभिमान, चोरी, चुगलखोरी और मदिरापान का सेवन नहीं करता वह सदा ही सुखी रहता है।

पता : महर्षि दयानन्द धाम, मकादेव, सुन्दर नगर, (हि.प्र.) १७४४०१

मदोन्मत्त की आत्महानि

दानार्थिनो मधुकरा यदि कर्णतालैर्दूरीकृता करिवरेण मदान्धबुद्धया।
तस्यैव गण्डयुगमण्डनहानिरेषा, भृङ्गाः पुनर्विकचपद्मवने चरन्ति॥

भावार्थ :- मद पर मंडराते वो याचक भ्रमरों को मदान्ध बुद्धि से यदि हाथी कान फड़फड़ाकर उड़ा डालता है तो इसमें भला भ्रमरों की क्या हानि हो गई ? उन्हें किस बात का खेद ? अरे .... वे तो उसी मदान्ध बुद्धि की शोभा को द्विगुणित कर रहे थे। जिसमें मद होगा वही तो सांसारिकों की दृष्टि में श्रेष्ठ हस्ती माना जावेगा ? मद ही तो हाथी का वैभव है ? और उसकी पहचान क्या है? जहां मद होगा वहीं तो भ्रमर झूमेंगे ? क्या गीदड़ पर वे चिपटेंगे भला ? पर .... हाय रे हाय भ्रष्ट बुद्धिधारी, मदोन्मत्त हाथी तेरे कुण्ठित भाग्य पर तरस आता है। अरे वे भँवरे तो तेरे ही गण्डस्थल का सौन्दर्य बढ़ा रहे थे। तेरे उड़ा डालने पर तेरे ही मस्तक का सौन्दर्य नष्ट हुआ। वे भँवरे तो तेरे माथे पर से उड़कर पुनः खिलेहुए कमलों के बाग में घूमने लग गए। यहाँ न बैठे और कहीं सही। उनके लिये भला क्या स्थान का अभाव था ? वे तो तेरा ही उपकार कर रहे थे। हे हतभाग्य! तूने स्वयं अपना गौरव नष्ट कर लिया। सांसारिक स्वार्थान्ध व्यक्तियों के प्रति बड़ा मार्मिक व्यङ्ग है ? स्वार्थ में मनुष्य इतने अन्धे हो जाते हैं कि वे अपने हितैषी प्रिय की तनिक भी मूल्याङ्कन नहीं कर पाते, तथा झिड़क डालते हैं। परन्तु इससे क्या हुआ, जो वास्तव में योग्य है, गुणी है, उनके लिये संसार में सर्वत्र ही एक से एक बढ़कर स्थान है, वह तो कहीं भी जाकर अपना सम्मान प्राप्त कर लेंगे। ऐ मानव तू जरा सोच तो सही।

– सुभाषित सौरभ

उपादेयात्मक

व्यक्तित्व निर्माण

– आनन्द प्रकाश गुप्त

"असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्मा अमृतं गमय।"

("हे प्रभु ! मुझे असत्य से सत्य की ओर, अंधकार से प्रकाश की ओर और मृत्यु से अमरता की ओर ले चलो।")

यदि हमारे मन में यह प्रश्न उठता है कि व्यक्तित्व का निर्माण क्यों ? तो फिर यह प्रश्न अवश्य उठना चाहिये कि यह मनुष्य जीवन ही क्यों ? क्या इस जीवन का भी कोई यथेष्ट उद्देश्य हो सकता है, क्योंकि जब हम यह अनुभव करते हैं कि इस संसार में कोई भी वस्तु बेकार नहीं बनी है, प्रत्येक वस्तु सकारण है। प्रत्येक चर–अचर प्राणी एक दूसरे के सहजीवी हैं। सभी पदार्थ एक वलय चक्र के रूप में विद्यमान हैं तथा प्रत्येक जीवधारी का एक निश्चित जीवन चक्र है। सभी जीवों में धारित गुण भी लगभग समान हैं। इसी प्रकार प्राणियों के मनोभाव तथा उनके क्रमिक विकास में भी बहुत कुछ समानताएं पाई जाती है। हां ! विभिन्न प्राणियों में हम पाते हैं कि किसी में गुणों की क्रियाशीलता कुछ कम है तो किसी में कुछ अधिक। इसी प्रकार हम पाते हैं कि जीवधारियों में प्रत्येक इन्द्रिय का जो भी विषय–गुण है, वह अवश्य ही इस परिवेश में कहीं विद्यमान हैं और इसी प्रकार जहाँ भी किसी तत्व की विद्यमानता है, वैसे ही गुणधर्म वाले जीव और पदार्थ वहाँ विद्यमान हैं। इसी प्रकार हम पाते हैं कि प्रत्येक संसार का कोई भी ऐसा पदार्थ, वस्तु या पेड़–पौधे अथवा प्राणी नहीं है, जिसके गुण –धर्म का प्रकृति में कोई सदुपयोग न हो। संसार में कुछ भी गुणहीन और सारहीन नहीं है। इस प्रकार हम पाते है कि इस मनुष्य जीवन के होने का कोई न कोई कारण अवश्य है और इसी कारण की खोज के लिए हमें इस पर चिंतन करने की आवश्यकता है, इस जीवन के उद्देश्य को जानने की आवश्यकता है और इस जीवन उद्देश्य को जानने के लिए आवश्यक है यथेष्ट दिशासूचक एक सार्थक पहल की। यह सार्थक पहल हमें यदि कहीं मिल सकती है तो वह हमारी मानसिक उत्क्रांति से ही संभव है। हमारी मानसिक चैतन्यता, इसकी सक्रियता ही हमें हमारे जीवनोद्देश्य को खोजने में मदद कर सकती है और यह चैतन्यता हमें प्राप्त हो सकती हैं मात्र तपोशील, स्वाध्यायी एवं आस्थापूर्ण, श्रद्धावान जीवन शैली से। हमारे सद्गुणी आचार हमारे सकारात्मक विचार और यथेष्ट आत्मशक्तिपूर्ण संकल्पित चरित्र से। इसलिए हमें अपने व्यक्तित्व निर्माण की ओर एकनिष्ट होकर लगनपूर्वक प्रयास करने की आवश्यकता है।

हमारा व्यक्तित्व ही मानव सभ्यता का दूसरा नाम है। हमारे पास यदि यथेष्ट चरित्र नहीं हो तो हमारी शक्तियों की अपेक्षा दुर्बलताएँ ही अधिक प्रभावी होंगी और हमारे सौभाग्य की तुलना में दुर्भाग्य ही अधिक बलशाली होगा। यह हमारा चरित्र ही है जो हमारे समाज के निर्माण का पूर्णतः जिम्मेदार है। हमारा चरित्र ही है जो हमें सामाजिक शान्ति–सामंन्जस्य, सुख–संयम, सच्चाई, व ईमानदारी का अवदान देता है। आज के समय में जब हमारा समाज और हमारी युवापीढ़ी इस ओर बिलकुल भी ध्यान नहीं दे रही है, हमें इस पर चिंतन करने और अपने रोजमर्रा के जीवन में उतारने की महती आवश्यकता है ताकि हमारी आगे आने वाली पीढ़ियाँ नैतिक मूल्यों के महत्व को समझें और वे चारित्रिक विकृति तथा वितण्डावाद के गहरे संकट में न फंसे। विचार करें यदि हममें आपस में विश्वसनीयता, प्रेम, परोपकारिता, न्यायपराणयता, जैसे सद्गुण शून्य हो जायेंगे तो हमारे समाज में सभी ओर लड़ाई–झगड़े, उत्तेजना–उपद्रव, भ्रष्टाचार–अनैतिकता का ही बोलबाला होगा।

महान चिंतक और विचारक कन्फ्यूशियस का कथन है **"अपने स्वयं के चरित्र का निर्माण तथा साथ ही दूसरों को भी वैसा ही करने में सहायता करना, स्वयं सफलता प्राप्त करने का प्रयास और दूसरों की भी सफलता में सहायक होना, सभी की एक साथ उन्नति अर्थात् सर्वोदय का सिद्धान्त है।"**

समाज में सभी की उन्नति आवश्यक है। यदि कोई भी व्यक्ति पीछे छूट जाता है और उसका चरित्र गिरता है या वह सही मार्ग से भटकता है तो इसकी जिम्मेदारी प्रत्येक चिंतनशील और बुद्धि संपन्न व्यक्ति की ही है क्योकिं जो बुद्धिशील और समाज के अधिष्ठाता हैं वही समाज को सही दिशा देने में सक्षम होते है। विभिन्न व्यक्तियों, समाजों एवं राष्ट्रों की आवश्यकताएँ भिन्न– भिन्न हैं। सबकी सफलता और उन्नति के अपने–अपने साधन और अपने–अपने मार्ग

हैं। जो कहीं पर समान हैं और कहीं पर भिन्न हैं । आज हम देखते हैं कि स्वार्थपरता के कारण यह किसी न किसी रूप में एक दूसरे की उन्नति के प्रतिकूल सिद्ध हो रहे हैं। आज आवश्यकता है सार्वभौमिक भलाई वाली सोच की और यह मात्र हमारे यथेष्ट चरित्र तथा श्रेष्ठ व्यक्तित्व से ही प्राप्त हो सकती है। एक मानवतावादी सोच ही सही मनुष्य का निर्माण कर सकती है और मात्र सही मनुष्य ही समस्त समस्याओं के निवारण में सहायक हो सकता है। कन्फ्यूशियस आगे भी कहते हैं कि "जिसमें मनुष्यत्व नहीं वह न तो अधिक काल तक निर्धनता को सहन कर सकता है और न ही सम्पन्नता को पचा सकता है।" यह बात वर्तमान काल में कितनी सच साबित हो रही है, क्योंकि निध् निता मनुष्य को दीन–हीन पशु में परिवर्तित कर रही है और धन की बाढ़ मनुष्य को बर्बर, दिशाहीन, अनुद्देश्यपूर्ण काल के गाल में ढकेल रही है।

यह सच है कि हमने प्रगति तो की है। हमारी कुशलता, बुद्धिचातुर्य, तथा स्वार्थपरता अवश्य ही आज पहले से अधिक विकसित है। परंतु स्वार्थपरता इतनी अधि क है कि वह कुशलता और बुद्धचातुर्य पर भारी पड़ रही है और हमारे समाज के अग्रिम पंक्ति में पदस्थ शासक, प्रशासक, न्यायाधीश, वकील, व्यवसायी, चिकित्सक, तकनीकी तंत्र से जुड़े व्यक्ति आज भ्रष्टतम स्थिति पर हैं। हमने आवागमन तथा संचार तकनीक में अभूतपूर्व प्रगति तो की है, हमने भौतिक दूरियों को कम तो किया है पर यह भी सच है कि हमारे मन की दूरियां बढी हैं। हम समाज को यदि सभ्यता के पैमाने पर आंकें तो आज हम अधिक असभ्य हुए हैं। आज मनुष्य –मनुष्य में भेद अधिक हो गया है। आज मनुष्य, मनुष्य का शोषण ही नहीं कर रहा वरन वह अपने समस्त परिवेश और पर्यावरण का शोषण करने पर अमादा है। मतभेद अधिक हुए हैं, समरसता और समझदारी कम हुई है। राग–द्वेष, ईर्ष्या के भाव अधिक हुए हैं तथा मानव मन की कलुषता में वृद्धि हुई है। मनुष्य ने मानवतावादी धर्म के लक्षणों को खो दिया है।

हम देखते हैं कि आज समाज में चरित्र की जो गिरावट आई है वही जल, थल और वायु में प्रदूषण के रूप में सभी ओर दिखाई दे रही है। प्रकृति ने तो सभी के लिए पर्याप्त स्थान और संसाधन उपलब्ध कराये हैं पर मनुष्य ही है जिसने इस संसाधनों को एक दूसरे से वंचित करके उसे निर्धन बना रखा है। इसी प्रकार हम प्रकर्षति को निहारे तो आज वह जिस प्रकार धूल–धूसरित है, उसमें जो विद्रूपता और विषमता दिखाई देती है वह मनुष्य के चरित्र–व्यवहार की स्वयं की उपज है। जबकि प्रकृति ने अपनी गोद में सब कुछ इतनी प्रचुरता से दिया है कि मानव को कुछ भी कमी नहीं है परंतु हम देखते हैं कि आज न तो हमें शुद्ध वायु मिल रही है और न ही शुद्ध पानी। यहाँ तक कि रासायनिक पदार्थों के प्रदूषण से हमारी धरती की उर्वरता भी समाप्त प्रायः होती जा रही है। आज मनुष्य नये–नये ऐसे कठिन रोगों से ग्रसित होता जा रहा है कि आज उसकी बहुत ही दयनीय स्थिति होती जा रही है। प्रकृति तो हमें सभी कुछ शुद्ध रूप में उपलब्ध कराती है पर यह मनुष्य का चरित्र ही है जो उसे अपने स्वयं के लिए, अपने बच्चों तथा अन्य लोगों को खिलाने के लिए भोजन पदार्थों मे मिलावट का जहर घोलता है। आज संसार जिन गंभीर स्थिति से ग्रसित है वह मानवता के लिए बहुत ही चिंताजनक है। आज हमारी पथ्वी विध्वसंक मिसाईलों, परमाणु बमों तथा रासायनिक हथियारों के गम्भीर परिणामों की आशंका से घिरी हुई है, जिन्हें मानव ने स्वयं निर्मित किया है। धन और धर्म के नाम पर विश्व स्तर पर आपसी मारकाट मची हुई है। यह आपसी द्वेष, मनुष्य की अपनी निम्न सोच का ही परिणाम है। कभी भी कोई खनिज और रासायन आपस में मिलकर स्वयं से विध्वंसक पदार्थ या बम की रचना नहीं करते यह मनुष्य का चरित्र ही है जो उसे अधोगति की ओर ले जाने पर आमादा है।

आज आवश्यक है एक महानायक की जो समाज को विश्वस्तर पर सही दिशा दे। जिससे हमारा व्यक्तित्व उत्तम हो और उसमें निखार आये। आज आवश्यकता है एक ऐसे महामानव कि जो अपने विचारों से संसार को अच्छी राह दिखाये और उसका मार्ग शान्ति की ओर प्रशस्त करे, जहाँ अपराधिक कार्यो की अपेक्षा सेवाभाव वाले कार्यों की प्रचुरता हो, असुरक्षा की अपेक्षा सुरक्षा का भाव अधिक हो, हमारे घर–हमारी बस्तियां, हमारी पृथ्वी गंदगी और प्रदूषण का अंबार बनने की अपेक्षा स्वच्छ, सुंदर और प्रदूषण मुक्त हो। हमारे शिक्षा संस्थान, न्यायालय, चिकित्सालय, व्यवसायिक प्रतिष्ठान न होकर उच्च्य चरित्र वाले, प्रकृति के सहजीवी भाव को प्रसारित करने वाले तथा निष्ठावान चरित्र के अनुगामी हों। यदि हमारा चरित्र अच्छा होगा, हमारे शिक्षार्थी चरित्रवान होगें। हमारे समाज मे शत्रुता की अपेक्षा एक दूसरे को ऊँचा उठाने एवं असहायों की सहायकता करने का पवित्र भाव ही फले फूलेगा। हमारे चिकित्सालय सेवाधर्म वाले होंगे और हमारे धर्मसंस्थान व्यवसायिकता के

केन्द्र न होकर सही मायने में धर्म के लक्षणों को समाज को देने वाले होंगे। धर्माचार्य और मठाधीश मात्र पौराणिक चरित्रों के किस्से–कहानी कहने वाले न होकर मनुष्य को मानवता का सही पाठ पढ़ाने वाले तथा सदाचरण को व्यवहार में लाने वाले होंगे। आज युवापीढ़ी मात्र कालयापन कर अपना जीवन नष्ट कर रही है। उसके पास न तो यथेष्ठ विचार हैं और न ही जीवन का कोई उद्देश्य। हम देखते हैं कि वर्तमान पीढ़ी असीम गति से दिशाहीन दौड़ रही है और स्वयं ही अपनी हंता बन रही है। वह स्व–अनुशासन भूलकर असंयमित जीवन जीने को बाध्य है। उसकी ऊर्जा, सुख–शांति तथा लावण्यता खोती जा रही है। उसका जीवन दयनीयता और चारित्रिक दरिद्रता की ओर बढ़ रहा है। वह पूर्णतः दिशाहीन है। इस प्रकार हम पाते हैं कि आज की पीढ़ी को दिशानिर्देश की परम् आवश्यकता है।

व्यक्तित्व निर्माण ही समाज को सही विचार और संस्कार दे सकता है। जिससे समाज में सुधारात्मक कार्यों में प्रगति हो। समाज सदैव जागरुक रहे और वह सदैव सामाजिक हित के कार्य साहस और उत्साह के साथ संपन्न करे। हमारे विचार ही हमारे व्यक्तित्व निर्माण की प्रथम कड़ी है, जिससे हमारी जीवन शैली, वैवाहिक– संबंध, पारिवारिक स्नेह तथा एकदूसरे के प्रति कलुषविहीन भावनाओं का उत्कष्ट विकास हो सकता है। सही विचार का अभाव समाज तथा लोकतंत्र के लिए बेहद खतरनाक है, आज हम देखते हैं कि समाज जटिल समस्याओं से घिरा हुआ है। पारिवारिक प्रेम की कड़ियाँ टूट रही हैं। इसप्रकार तो मानव– मानव मे भेद बढ़ता ही जायेगा। मन का विश्वास खो जायेगा, आनंद और खुशी का अभाव होगा, साथ ही नेत्रों तथा चेहरे का तेज खो जायेगा। हम विचार रहित हो अपनी आत्मशक्ति और विश्वास भी खो बैठेंगे। समाज की प्रफुल्लता समाप्त हो जायेगी।

आवश्यकता है एक वैचारिक और सुधारात्मक, सामाजिक निर्माण के आंदोलन की और वह मात्र संभव है सामाजिक चरित्र के उत्थान से। हमारा चरित्र ही हमारा व्यक्तित्व है। हम जो दिखाई देते हैं वही हम हैं, विद्वानों ने कहा है कि "किसी व्यक्ति का पूरा स्वभाव तथा चरित्र ही उसका व्यक्तित्व कहलाता है।" आप जिस प्रकार के व्यक्ति हैं, वही आपका व्यक्तित्व है और वह आपके आचरण संवेदनशीलता तथा विचारों से व्यक्त होता है। प्रश्न यह है कि सदाचरण तथा संवेदनशीलता समाज में कैसे प्रसारित हों, क्योंकि यही हैं जिनसे व्यक्तित्व का निर्माण होता है। यह मनुष्य का चरित्र ही है जिससे वह अपने इतिहास का निर्माण करता है। वह इस संसार में अपने अस्तित्व की शैली को अंकित कर जाता है। यही मात्र उसकी नेकनामी तथा अमरता का एक माध्यम है। यह उसकी प्रत्येक उपलब्धि से ऊपर है। **"मनुष्य वही बनता है जो वह बनना चाहता है"**, यह आकाट्य सत्य है। उसका संसार भी वैसा ही बनता है, जैसे उसके संस्कार होते हैं। इस प्रकार मनुष्य अपने पीछे वैसा ही इतिहास छोड जाता है जैसा उसका चरित्र होता है, क्योकिं किसी भी व्यक्ति के संस्कारों की समष्टि, उसकी सभी मानसिक वृतियों का संकलन ही उसका चरित्र है। अच्छे विचारों तथा संस्कारों से ही उसका चरित्र अच्छा होता है।

इस प्रकार हम देखते है कि हमारा व्यक्तित्व हमारे संयमित आचरण पर निर्भर है और हमारा आचरण हमारे संस्कारों पर तथा संस्कार विचारों पर निर्भर है। संयमित मन हमारे मित्र के समान आचरण करता है और असंयमित मन एक शत्रु की भांति। यदि मन तथा इन्द्रियां अनुशासित और संयमित हैं तो मनुष्य जीवन के लक्ष्य तक पहुँच सकता है। व्यक्ति की भावनाएँ जितनी अनुशासित तथा संयमित होगीं उसका व्यक्तित्व भी उतना ही स्वस्थ और उच्च होगा। इस प्रकार हम पाते हैं कि व्यक्ति अपने जीवन लक्ष्य को तभी प्राप्त कर सकता है जब उसका चरित्र उत्तम हो और चरित्र की उत्कृष्टता के लिए आवश्यक है कि उसके विचार, संस्कार, और व्यवहार उत्कृष्ट हों। इसलिये अपने भविष्य के निर्माण के लिए हमें वर्तमान में अधिक श्रम और अधिक शुद्धतापूर्ण जीवनशैली अपनानी होगी, क्योंकि यह सत्य है कि भूतकाल ने वर्तमान का निर्धारण किया है, हमारे वर्तमान विचार तथा व्यवहार हमारा भविष्य निर्धारित करेंगे। यह व्यक्तित्व विकास को नियंत्रित करने वाला मूलभूत सिद्धान्त है। आज आवश्यकता है कि हम छोटे तथा साधारण कार्य को भी इतनी प्रतिबद्धता से सम्पन्न करें कि उसके परिणाम से हमारी उत्कृष्टता प्रकट हो।

पता – ए.एस. 302, सुमंगल अपार्टमेंट, लिंक रोड, बिलासपुर (छ.ग.)

एकेश्वरवादी, अपने सिद्धान्तों को वेद पर निर्भर मानने वाले, प्रगति समर्थक और देशोद्धारक का नाम दयानन्द सरस्वती है।
(मोनियर विलियम अंग्रेज विद्वान)

२१जून
अन्तर्राष्ट्रीय योग
दिवस पर

निष्काम भाव से कर्मरत रहने का नाम ही योग है

- विवेक प्रिय आर्य, मथुरा उत्तरप्रदेश

हम अपने बनाए मंदिरों को साफ-सुथरा रखते हैं, लेकिन कैसा आश्चर्य है कि ईश्वर की बनाई "अष्टचका नव द्वारा देवानां पुरयोध्या" अर्थात् आठ चक्र और नौ दरवाजों वाली अयोध्या नगरी में यानी अपने शरीर रुपी मानव मंदिर में हम शराब, मांस, अंडे, भांग, बीड़ी, सिगरेट का धुआं सब कुछ डालते हैं। जीवन कला के अभ्यासी को आहार शुद्धि का विचार करते हुए यह भी ध्यान रखना है कि हमारी कमाई भी शुद्ध और सात्विक हो, उसमें कर्मचारियों का रक्त नहीं सना हो।

सामान्यतया समझा जाता है कि योग का अर्थ अग्नि या सूर्य के समक्ष महीनों वर्षों तपना नहीं होता। क्योंकि यदि तपना ही होता तो मोक्ष का अधिकारी पतंगा होता है जो दीपक पर अपने स्वाहा कर देता है। न जल में वर्षों खड़े होने पर मोक्ष मिलता है, क्योंकि बगुला घंटों पानी में ध्यान मग्न खड़ा रहता है और मछली तो जल में ही उत्पन्न होती है तथा जीवन पर्यन्त जल में ही रहकर अंत में जल समाधि लेती है। इसी प्रकार ठंडेश्वरी या मौनी बाबा का क्षणिक नाटक है। प्रदर्शन मान-प्रतिष्ठा प्राप्त करने तथा कुछ कमाने का चोखा धंधा है। **योग का वास्तविक अर्थ है कि अपने वर्णाश्रम के अनुसार निष्काम भाव में कर्मरत रहना, वासनाओं की अग्नि में इन्द्रियों को तपाकर निर्विषय कर देना और जीवन संयम के समस्त दुःखों को प्रभु प्रसाद समझकर उनसे सम्पूर्ण पुरुषार्थ के साथ विषांक रुप में जूझते रहना।** प्रायः समझा जाता है कि लोकोयं कर्म बंधनः अर्थात् कर्म लोक बंधन का कारण है। लेकिन योग इसके विपरीत हमें सिखाता है कि कर्म ही बंधन मुक्ति का साधन है। अब प्रश्न है कि कौन सा धर्म है जो योग बन गया है, यज्ञ बन गया है। कर्म में यह कौशल कि वह यज्ञ बन जाये, यही योग है और यही जीवन कला है। भगवान् श्रीकृष्ण कहते हैं कि **"योगः कर्मसु कौशलम्"** अर्थात् कर्म में कौशल उसे यज्ञमय में बना देता है, प्रभु से वियोग नहीं योग करता है अथवा मिलाता है। इस प्रकार ज्ञान पूर्वक किए गए कर्म जब यज्ञ का रुप लेते हैं तो वही उपासना बन जाते हैं।

ज्ञान, कर्म और उपासना का यह त्रिवेणी संगम मानव कामोक्ष तीर्थ बन जाता है। कानों से हम भद्र सुनें, आंखों से अभद्र देखें, धरती को मधुरता से सींचने के लिए शहद जैसा मीठा और हितकारी भद्र वचन कहें। मस्तिष्क से भद्र चिंतन, हाथों से भद्र कर्म और पांव से भद्र चलन करें तब होगा हमारा आत्म ज्ञान। इसी को वेद माता ने इस बहु योग भी कहा है। भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में इसे समत्व योग कहा है। श्रीकृष्ण कहते हैं कि हे अर्जुन! संसार के सारे दुःख संग के कारण है। योग और कुछ नहीं है कर्म करते हुए सिद्धि-असिद्धि में समभाव बनाए रखना, परमात्मा के साथ युक्त रहना, अपने को उसी के हाथों से देना ही योग है। वहीं हमारे भीतर के शत्रु काम, क्रोध, लालच, लालसा, झूठ, बेईमानी, दुराचार आदि है। मनुष्य कितने ही आविष्कार क्यों न कर ले, कितना ही बड़ा साम्राज्य क्यों न खड़ा कर ले, लेकिन जब तक उसके भीतर ये शत्रु बैठे हैं तब तक बाहर की जीत, जीत नहीं हार है। क्योंकि जितना ही वह लालच और लालसा, झूठ और बेईमानी से बाहर का सामान जुटाता जाएगा उतना ही उसका लालच, उसकी लालसा, उसकी बेईमानी, उसकी दूसरों का खून पीने की प्यास बढ़ती जाएगी। जीत तो तभी होगी जब जिस प्यास को बुझाने तुम निकले हो, वह प्यास बुझ जाएगी। क्या सिकंदर की प्यास बुझी ? क्या नेपोलियन की प्यास बुझी ? क्या हिटलर और

मुसोलिनी की प्यास बुझी ? यह सब लालसा की प्यास में ही डूब गये। प्रश्न यह है कि क्या कोई ऐसा रास्ता है जिससे मनुष्य भीतर के इन शत्रुओं से जीता जा सके। इसका उत्तर भारत की संस्कृति के पास है। वह है योग दर्शन के रचयिता पतञ्जलि मुनि के पांच यम। अपने तथा मानव समाज के जीवन के भवन को वैदिक संस्कृति के उन पांच आधार स्तंभों पर खड़ा कर देना, जिनकी नींव पाताल तक तथा चोटी हिमालय के शिखर तक चली गई है, यह पांच यम हैं- अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह। इन्हीं को योग भी कहा गया है। योग का अर्थ अपने को संपूर्ण रुप से मानव-देव-ऋषि बनाना है और इसका साधन प्रभु के मंदिर मानव शरीर की एक-एक इन्द्रिय को उपयोगी बनाना है।

पता : मथुरा, उत्तरप्रदेश, मो. ०९१७१९९१०५५७

विचार-बोध

ज्वालयतु रे ! दीप पंक्तिम्

– डॉ. प्रशस्यमित्र शास्त्री
(साहित्य अकादमी एवं राष्ट्रपति सम्मान प्राप्त)
रायबरेली (उ.प्र.)

दीपकेनैकेन कृपया ज्वालयतु रे दीप पंक्तिम्।

राष्ट्र रक्षार्थं हि सततं सैनिका नः विगतनिद्राः,
सज्जिताः सीमाप्रदेशे सर्वथा सन्नद्धमुद्राः।
देशप्रेम्ण स्तदर्थं वाचयस्व सदा प्रशस्तिम् ॥१॥
ज्वालयतु रे ! दीप पंक्तिम्।

मूढ़ता दीनता जड़ता प्रतिदिनं वर्धते देशे,
ज्ञान हीन जनाश्च धूर्त्ताः निःसृताः खलु साधुवेशे।
ज्ञान-ज्योतिरुदेतु नित्यं नाशयतु तामिस्र-शक्तिम्॥
ज्वालयतु रे ! दीप पंक्तिम् ॥२॥

राजनीतिरियं सखे ! ननु वर्त्तते गणिकेव चेष्टा,
नैव विश्वासः सतामिह धारणेयं हृदि निविष्टा।
कण्टकाकीर्णेषु पथिषु दर्शयसि किं स्वाऽनुरक्तिम्॥
ज्वालयतु रे ! दीप पंक्तिम् ॥३॥

शोषिताश्च बुभुक्षिताश्च वस्त्रहीनजना अनेके,
पर्यटन्ति विभिन्न पथिषु चेतनावन्तः स्वदेशे।
जड़े पाषाणे परं त्वं दर्शयसि किं वृथा भक्तिम् ?
ज्वालयतु रे ! दीप पंक्तिम् ॥४॥

भ्रष्टमाचरणं जनेषु वर्धते तद् महारोगः,
जाति-वर्ग-विशेषतावादः जृम्भते ननु महाशोकः।
रोग-शोक-निवारणार्थं चिन्तयतु काञ्चिदपि युक्तिम्॥
ज्वालयतु रे ! दीप पंक्तिम् ॥५॥

लोकतन्त्रमिदं विचित्रं नैव चिन्तयते दरिद्रान्,
राजनेतारस्तु सततं साधयन्ति सदा समृद्धान्।
सत्यनिष्ठा-विरहितेभ्यो दापयिष्यति को विमुक्तिम् ?
ज्वालयतु रे ! दीप पंक्तिम् ॥६॥

मातरं पितरं गुरुं कः सेवते बहुप्रीतियुक्तः,
संस्कृतं वेदोपनिषदं कः पठति श्रद्धाऽभिभूतः।
उत्तरं प्राप्तुं प्रयुञ्जे नाम्नि ते प्रथमा-विभक्तिम्॥
ज्वालयतु रे ! दीप पंक्तिम् ॥७॥

योग-सुविचार

जीवन मुक्त योगी पुरुष सोते-जागते, चलते-फिरते ईश्वरप्रणिधान के द्वारा अपने स्वरुप में ही स्थित होता है, उसके संशय, अंज्ञान, हिंसा आदि नष्ट हो गए हैं और वह योगी अविद्या आदि क्लेशों तथा अविद्याजन्य-संस्कारों का नाश करता हुआ, नित्य योगाभ्यास करता हुआ मोक्ष के आनन्द का अधिकारी बन जाता है।

महारानी लक्ष्मीबाई
१८ जून बलिदान दिवस

खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी...

सिंहासन हिल उठे राजवंशों ने भृकुटी तानी थी,
बूढ़े भारत में भी आई फिर से नयी जवानी थी,
गुमी हुई आजादी की कीमत सबने पहचानी थी,
दूर फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी।

चमक उठी सन सनतावन में, वह तलवार पुरानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी ॥

कानपुर के नाना की, मुंह बोली बहन छबीली थी,
लक्ष्मीबाई नाम, पिता की वह संतान अकेली थी,
नाना संग पढ़ती थी वह, नाना के संग खेली थी,
बरछी, ढाल, कृपाण, कटारी उसकी यही सहेली थी।

वीर शिवाजी की गाथायें उसको याद जबानी थी,
बुंदेले हरबोलो के मुंह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी ॥

लक्ष्मी थी या दुर्गा थी वह स्वयं वीरता की अवतार,
देख मराठे पुलकित होते उसकी तलवारों के वार,
नकली युद्ध-व्यूह की रचना और खेलना खूब शिकार,
सैन्य घेरना, दुर्ग तोड़ना ये थे उसके प्रिय खिलवाड़।

महाराष्ट्र-कुल-देवी उसकी भी आराध्य भवानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुंह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी ॥

हुई वीरता की वैभव के साथ सगाई झांसी में,
ब्याह हुआ रानी बन आई लक्ष्मी बाई झांसी में,
राजमहल में बजी बधाई खुशियाँ छाई झांसी में,
सुघट बुंदेलों की विरुदावलि-सी वह आयी झांसी में

चित्रा ने अर्जुन को पाया, शिव को मिली भवानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुंह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी ॥

उदित हुआ सौभाग्य, मुदित महलों में उजियाली छाई,
किंतु कालगति चुपके-चुपके काली घटा घेर लाई,
तीर चलाने वाले कर में उसे चूड़ियां कब भाईं,
रानी विधवा हुई, हाय ! विधि को भी नहीं दया आई।

निसंतान मरे राजाजी रानी शोक-समानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुंह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी ॥

बुझा दीप झाँसी का तब डलहौजी मन में हरषाया,
राज्य हड़प करने का उसने यह अच्छा अवसर पाया,
फ़ौरन फौजें भेज दुर्ग पर अपना झंडा फहराया,
लावारिस का वारिस बनकर ब्रिटिश राज्य झांसी आया।

अश्रुपूर्ण रानी ने देखा झाँसी हुई बिरानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुंह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी ॥

अनुनय विनय नहीं सुनती है, विकट शासकों की माया,
व्यापारी बन दया चाहता था जब यह भारत आया,
डलहौजी ने पैर पसारे, अब तो पलट गई काया,
राजाओं नवाबों को भी उसने पैरों ठुकराया।

रानी दासी बनी, बनी यह दासी अब महारानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुंह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी ॥

- सुभद्रा कुमारी चौहान : कविता कोष

पुण्य स्मरण

छत्तीसगढ़ के भामाशाह

प्राकट्य दिवस पर विशेष

दानवीर तुलाराम परगनिहा

दानवीर श्री तुलाराम परगनिहा द्वारा दिनांक २६-६-१९२६ को स्त्री शिक्षा, संस्कृत तथा वैदिक शिक्षा के प्रसारण हेतु छत्तीसगढ़ में आर्यसमाज की स्थापना करते हुए उसे अपना सर्वस्व दान कर दिया था। तुलाराम परगनिहा के पूर्वज केशवराम खांडकपूर सर्वप्रथम सेवार-कड़ार (बिलासपुर) में आकर बस गये। जलस्रोत के अभाव के कारण वे वहां अधिक दिनों तक निवास नहीं कर सके और अपने परिवार के साथ दुर्ग जिला की ओर प्रस्थान कर गये। उनकी एक शाखा धमधा राज के सीमावर्ती गाँव तारालीम (विकास खंड बेरला) में आकर निवास करने लगा। ये कृषि कार्य में दक्ष थे। १८६३ ई. के भयंकर अकाल के समय नगहा खांड़कपूर ने अन्न-धन वितरण कर परगना के लोगों को अकाल मृत्यु से बचाया था। इसलिए धमधा के तत्कालीन राजा भवानी सिंह ने उनके उदार सेवा भाव के कारण "परगनिहा" की उपाधि से नवाजा था। तब इसका वंश परगनिहा उपजाति के नाम से जाने जाना लगा।

इस संदर्भ में अवगत हो कि केशवराम खांडकपूर के वंश में तुलाराम जी परगनिहा आठवीं पीढ़ी संतान थे। सन् १८६३ में राय साहेब पीताम्बर सिंह पगरनिहा के परिवार में ग्राम भिंभौरी, जिला दुर्ग में इनका जन्म हुआ। अपने पिता की चार संतानों में इनका क्रम दूसरा था। परगनिहा परिवार मनवा कूर्मि के नाम से जाना जाता है। आज इनका वंश दुर्ग एवं रायपुर जिले में विस्तृत है। तुलाराम परगनिहा की प्रारम्भिक शिक्षा रायपुर में हुई। बचपन से वे मेधावी छात्र रहे। परिवार की धार्मिक पृष्ठ भूमि के कारण इन्हें आगे अध्ययन के लिये धर्म नगरी इलाहाबाद भेजा गया। जहां से इन्होंने स्नातक की उपाधि प्राप्त किया और छत्तीसगढ़ का प्रथम स्नातक होने का गौरव प्राप्त किया। तुलाराम परगनिहा ने शासकीय सेवा करने का निश्चय किया। सन् १९०५ (४२ वर्ष की उम्र) में वे तहसीलदार के पद पर सागर में पदस्थ हुए। अपनी शिक्षा व शासकीय सेवा के दौरान अनेक महापुरुषों के सान्निध्य में आये और सेवाभावी संस्थाओं से निकट का संबंध बनाये रखा। इस समय हमारे देश में धार्मिक व सामाजिक सुधार आन्दोलन अपना प्रभाव स्थापित करने लगा था। स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित आर्यसमाज उत्तरप्रदेश, राजस्थान, गुजरात और पंजाब में महत्वपूर्ण सामाजिक और राजनैतिक शक्ति बन गया था। उसकी एक शाखा सीपी (मध्यप्रदेश) एवं बरार के नाम से नागपुर में स्थापित हो गई। दुर्ग के प्रसिद्ध मालगुजार एवं वकील घनश्यामसिंह गुप्त को इस प्रतिनिधि सभा का प्रधान नियुक्त किया गया। तुलाराम ने इन संस्थाओं के प्रमुखों से सतत् संपर्क बनाये रखा और संस्था के कार्यों से प्रभावित होते हुये स्त्री शिक्षा के लिए सर्वस्व दान कर दिये।

सोनाखान की जमींदारी को ब्रिटिश राज्य सम्मिलित करने के पश्चात् गोल्ड माइनिंग कंपनी ने खरीद लिया था, परन्तु व्यवसायिक दृष्टि से यह उनके लिए हानिकारक साबित हुई। इसलिए उन्होंने इसे बेचने का निर्णय लिया। सन् १९२० ई. में इनके पिता राय साहेब पीताम्बर सिंह परगनिहा ने इस कंपनी के पार्टनर जेम्स हंडरसन से कलकत्ता जाकर भेंट की। वीशब कॉटन स्कूल हावड़ा के छात्रावास में सोनाखान जमींदारी का सौदा निश्चित हुआ और उन्होंने इस जमींदारी के २२ गांव १८ हजार रुपये में खरीद लिये।

तुलाराम परगनिहा की दो पत्नियाँ थीं। महासिर बाई एवं कलावती बाई। इनकी दो संतानें थीं। एक लड़की गुरुदेवी और एक पुत्र मोक्षेन्द्र नाथ हुआ। अल्पायु में ही पुत्र के कालकवलित (मृत्यु) हो जाने के बाद, वे पुत्र वियोग में बीमार रहने लगी। उन्होंने अपनी पुत्री का विवाह कविराज जगदीशचन्द्र बघेल संकरी (बलौदाबाजार) के साथ कर दिया। शासकीय सेवा से अवकाश ग्रहण करने के पश्चात् उनका मन विचलित रहने लगा और अपने परिवार सहित सन् १९२५ ई. में पैतृक गांव छोड़कर कूंरा (धरसींवा) जिला रायपुर आ गये। इनका झुकाव प्रारंभ से ही आर्यसमाज की ओर था और अब उन्होंने निश्चिय किया कि अपनी पूर्ण सम्पत्ति को राष्ट्रीय आकांक्षाओं के अनुरुप संस्कृत शिक्षा, स्त्री शिक्षा, वैदिक धर्म प्रचार और अनाथ सेवा में

समर्पित कर देंगे। कूंरा आने के पश्चात् वे दाऊ घनश्यामसिंह गुप्त के अधिक निकट आये, जो आर्य प्रतिनिधि सभा म.प्र. और बरार के प्रधान थे। उन्होंने संकल्प लिया कि वे समाज सुधार और छत्तीसगढ़ में स्त्री शिक्षा प्रचार करने अपनी सारी सम्पत्ति आर्यसमाज को दान कर देंगे। इस आशय का उन्होंने अंतिम वसीयत कर दिया। अपनी इस अंतिम इच्छा को पूर्ण करने के लिए पैतृक सम्पत्ति का बंटवारा लिया और कूंरा ग्राम को ३० हजार रुपये में खरीदा।

तुलाराम परगनिहा समाज के उपेक्षित और पिछड़े वर्ग के उत्थान के साथ-साथ अनाथों के प्रति सहानुभूति रखते थे। छत्तीसगढ़ में स्त्री शिक्षा का विकास करना ही उनका प्रमुख लक्ष्य था। इसलिए ६३ वर्ष की आयु में उन्होंने सोनाखान जमींदारी के चार गांव चनाट, कसौंदी, भुसड़ीपाली, बोदापाली की कुल सम्पत्ति एवं ५५ सौ एकड़ जमीन, ढनढनी का पूरा गाँव, लवन का २५ प्रतिशत, कूंरा की पूरी सम्पत्ति एवं ३५० एकड़ भूमि, इसके अतिरिक्त ढाबा, कुम्ही और बोरिया प्रत्येक की २५ प्रतिशत सम्पत्ति उद्देश्य पूर्ति के लिए आर्यसमाजी संस्था को दिनांक २६ जून १९२६ को दान देकर वसीयत कर दिया। अपनी एकमात्र पुत्री गुरुदेवी के मुरहुठी गांव का सात आना जो उनके हिस्से में था, जीविकोपार्जन के लिए दे दिया। उन्होंने कुल स्थावर एवं जंगम जायजाद का पूरा-पूरा मालिकाना हक श्रीमती आर्य प्रतिनिधि सभा म.प्र. एवं बरार को देकर पैतृक निवास भिभौंरी की जायजाद को अपनी दोनों पत्नियों के परवरिश के लिये छोड़ दिया। इस तरह प्रथम स्नातक होने के साथ-साथ छत्तीसगढ़ में आर्यसमाज के संस्थापक बन गये।

छत्तीसगढ़ में ऐसे बहुत कम लोग हैं जिन्होंने अपना सर्वस्व त्याग कर निःस्वार्थ भाव से छत्तीसगढ़ का विकास चाहा हो। संस्कृत शिक्षा के प्रति उनकी विशेष आस्था था। स्त्री शिक्षा के वे जबरदस्त पक्षधर थे। अनाथ बच्चों के प्रति उनके मन में दया का भाव विद्यमान था। इसलिए अपनी वसीयत में अपनी अंतिम इच्छा इस प्रकार व्यक्त किया - *" मेरी यह प्रबल इच्छा है कि मेरी जायदाद किसी व्यक्ति विशेष के उपयोग में न आवे और कोई व्यक्ति विशेष उसका स्वामी नहीं हो, बल्कि मेरी यह प्रेरणा है कि मेरी सम्पूर्ण जायदाद किसी पुण्य कार्य में लग जावे और ऐसी संस्था के स्वामित्व में जावे जो कि सुसंस्कृत विद्या दान, स्त्री शिक्षा, गुरुकुल, अनाथ रक्षा आदि के लिए प्रयत्न करती हुई वैदिक धर्म का प्रचार व विस्तार में लगी रहती है। सब बातों को अच्छी तरह सोंचकर और बहुत विचार के बाद मैने यह पक्का निश्चय किया है कि मेरी जायजाद मेरे मरने के बाद आर्यसमाजी संस्था को जावे।"* अपनी इच्छा को मूर्तरुप प्रदान करने का दायित्व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली एवं जालंधर कन्या महाविद्यालय के संचालकों पर छोड़ दिया कि वे इस जायदाद से छत्तीसगढ़ के किसी स्थान में कोई विद्या दान की संस्था, स्त्री शिक्षा के लिए विद्यालय जालंधर कन्या विद्यालय के नमूने पर चलावें। इस प्रकार छत्तीसगढ़ के इस सपूत ने छत्तीसगढ़ में आर्यसमाज की नींव डाली। दिनांक २६ जून १९२६ ई. मिती जेठ सुदी १४, संवत् १९८३ के दिन उनके वसीयत पर हस्ताक्षर हुए। गवाह के रुप में उनके भाई दाऊ उदयराम परगनिहा एवं सोनपैरी वाले हेमनाथ ब्राह्मण मालगुजार के हस्ताक्षर के साथ घनश्यामसिंह गुप्ता दुर्ग ने आर्य प्रतिनिधि सभा म.प्र. विदर्भ की ओर से हस्ताक्षर किया। यह वसीयत ३ जुलाई १९२६ को विधिवत पंजीकृत हुआ। इसके कुछ समय बाद ही २५ अगस्त १९२६ को तुलाराम जी परगनिहा का स्वर्गवाश हो गया।

उनकी इच्छा के अनुरुप आर्य प्रतिनिधि सभा ने दुर्ग में दाऊ तुलाराम आर्य कन्या विद्यालय की स्थापना की, जो आज कन्या महाविद्यालय के रुप में संचालित है। छत्तीसगढ़ शासन द्वारा ग्राम उतई जिला दुर्ग में दानवीर तुलाराम जी परगनिहा की स्मृति में महाविद्यालय संचालित किया जा रहा है।

वर्तमान में लवन, कूरा, ढाबा एवं कुम्ही में लगभग ६०० एकड़ जमीन एवं सभा बाड़ा छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के आधिपत्य में कृषि कार्य संपादित करते हुए तुलाराम परगनिहा के नाम पर कन्या विद्यालय संचालित कर रही है। दिनांक १ नवंबर २००० को मध्यप्रदेश से अलग होकर छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण होने के पश्चात दिसंबर २००३ से विधिवत छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का गठन किया जाकर विगत १५ वर्षों से संस्था सुचारु रुप से संचालित हो रही है। आर्यसमाज संगठन के शिरोमणी संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के तत्कालीन सभा प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य द्वारा प्रमाण पत्र देते हुए, छत्तीसगढ़ प्रान्त स्थित दानवीर तुलाराम परगनिहा द्वारा प्रदत्त समस्त चल-अचल सम्पत्ति एवं आर्यसमाजों के प्रबंधन का सम्पूर्ण अधिकार छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा को दिया गया है।

- दीनानाथ वर्मा, मंत्री

देशभक्तों के सरताज : पं. रामप्रसाद बिस्मिल

पुण्य संस्मरण

जन्म : ११ जून १८९७

रामप्रसाद बिस्मिल भारत के महान क्रान्तिकारी थे जिन्होने भारत की आजादी के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी। उनका जन्म ११ जून सन् १८९७ को उत्तर प्रदेश के शाहजहांपुर शहर में हुआ था। उनके पिताश्री मुरलीधर, शाहजहाँपुर नगरपालिका में काम करते थे। १९ दिसम्बर सन् १९२७ को बेरहम ब्रिटिश सरकार ने गोरखपुर जेल में फांसी पर लटकाकर उनकी जीवन लीला समाप्त कर दी।

रामप्रसाद बिस्मिल के दादाजी नारायणलाल का पैतृक गांव बरबई तत्कालीन ग्वालियर राज्य में चम्बल नदी के बीहड़ों में बसे तत्कालीन तोमरधार क्षेत्र किन्तु वर्तमान मुरैनाजिले में आज भी है। बरबई ग्रामवासी बड़े ही उद्दण्ड प्रवृति के व्यक्ति थे जो आये दिन अंग्रेजों व अंग्रेजी आधिपत्य वाले गाम वासियों को तंग करते थे। पारिवारिक कलह के कारण नारायणलाल ने अपनी पत्नी विचित्रादेवी व दोनों पुत्रों मुरलधर एवं कल्याणमल सहित अपना पैतृक गांव छोड़ दिया। उनके गांव छोड़ने के बाद बरबाई में केवल उनके दो भाई अमानसिंह व समान सिंह ही रह गये। उनके वंशज आज भी उसी गांव में रहते हैं। केवछ इतना परिवर्तन हुआ है कि बरबई में रामप्रसाद बिस्मिल की एक भव्य प्रतिमा स्थापित कर दी गयी है।

काफी भटकने के पश्चात् यह परिवार शाहजहाँपुर आ गया। शाहजहाँपुर में मुन्नूगूंज के फाटक के पास स्थित अतार की दुकान पर मात्र तीन रुपये मासिक में नारायणलाल ने नौकरी करना शुरु करदिया। भरे-पूरे परिवार का गुजारा न होता था। मोटे अनाज, बाजरा, ज्वार, सामा, ककुनी को राँध (पका) कर खाने पर भी काम न चलता था। फिर बथुआ या ऐसा ही कोई साग आदि आटे में मिलाकर भूख शान्त करने का प्रयास किया गया। दोनों बच्चों को रोटी बनाकर दी जाती किन्तु पति-पत्नी को आधे भूखे पेट ही गुजारा करना होता। ऊपर से कपड़े-लत्ते और मकान किराये की विकट समस्या तो थी ही।

बिस्मिल की दादीजी विचित्रा देवी ने अपने पति का हाथ बटाने के लिये मजदूरी करने का विचार किया किन्तु अपरिचित महिला को कोई भी आसानी से अपने घर में काम पर न रखता था। आखिर उन्होने अनाज पीसने का कार्य शुरु कर दिया। इस काम में उनको तीन-चार घण्टे अनाज पीसने के पश्चात् एक या डेढ़ पैसा ही मिल पाता था। यह सिलसिला लगभग दो-तीन वर्ष तक चलता रहा। दादीजी बड़ी स्वाभिमानी प्रकृति की महिला थीं, अतः उन्होंने हिम्मत न हारी। उनको पक्का विश्वास था कि एक-एक एक दिन अच्छे दिन अवश्य आयेंगे।

समय बदला। शहर के निवासी शनैः शनैः परिचित हो गये। नारायणलाल थे तो तोमर जाति के क्षत्रिय किन्तु उनके आचार-विचार, सत्यनिष्ठा व धार्मिक प्रवृत्ति से स्थानीय लोग प्रायः उन्हें पण्डितजी ही कहकर सम्बोधित करते थे। इससे उन्हें एक लाभ यह भी होता था कि प्रत्येक तीज त्योहार पर दान-दक्षिणा व भोजन आदि घर में आ जाया करता। इसी बीच नारायणलाल को स्थानीय निवासियों की सहायता से एक पाठशाला में सात रुपये मासिक पर नौकरी मिल गई। कुछ समय पश्चात् उन्होंने यह नौकरी भी छोड़ दी और रेजगारी (इकन्नी-दुअन्नी, चवन्नी के सिक्के) बेचने का कारोबार शुरु कर दिया जिससे उन्हें प्रतिदिन पाँच-सात आने की आय होने लगी। अब तो बुरे दिनों की काली छाया भी छटने लगी। नारायणलाल ने रहने के लिये एक मकान भी शहर के खिरनीबाग मोहल्ले में खरीद लिया और बड़े बेटे मुरलीधर का विवाह अपने

ससुराल वालों के परिवार की एक सुशील कन्या मूलमती से करके उसे इस घर में ले आये।

घर में बहू के चरण पड़ते ही बेटे का भी भाग्य बदला और मुरलीधर को शाहजहाँपुर नगर निगम में १५ रुपये मासिक वेतन पर नौकरी मिल गई किन्तु उन्हें यह नौकरी न रूचि। अतः उन्होने त्यागपत्र देकर कचहरी में स्टाम्प पेपर बेचने क काम शुरु कर दिया। इस व्यवसाय में उन्होने अच्छा खासा धन कमाया। तीन बैलगाड़ियाँ किराये पर चलने लगी व ब्याज पर रुपये उधार देने का काम भी करने लगे। ज्येष्ठ शुक्ल ११ संवत १९५४ (वि.) को दोपहर ११ बजकर ११ मिनट पर रामप्रसाद का जन्म हुआ। उस दिन अंग्रेजी तारीख ११ जून १८९७ थी। लगभग सात वर्ष की अवस्था से रामप्रसाद को हिन्दी व उर्दू का अक्षर ज्ञान करवाया जाने लगा। मुरलीधर के कुल ९ संतानें हुई जिनमें पांच पुत्रियाँ एवं चार पुत्र थे। रामप्रसाद उनकी दूसरी संतान थे। उनसे पूर्व एक पुत्र पैदा होते ही मर चुका था। आगे चलकर दो पुत्रियों एवं दो पुत्रों का भी देहान्त हो गया।

बाल्यकाल से ही रामप्रसाद की शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया जाने लगा। जहां कहीं वह गलत अक्षर लिखता उनकी खूब पिटाई की जाती लेकिन उसमें चंचलता व उद्दण्डता कम न थी। मौका पाते ही पास के बगीचे में घुसकर फल आदि तोड़ लेता जिसकी उसकी कसकर पिटाई भी हुआ करती लेकिन वह आसानी से बाज न आता। शायद यही प्राकृतिक गुण रामप्रसाद को एक क्रान्तिकारी बना पाये अर्थात् वह पुराने विचारों में जन्म से ही पक्का था। लगभग १४ वर्ष की आयु में रामप्रसाद को अपने पिता की सन्दूकची से रुपये चुराने की लत पड़ गई। चुराये गये रुपयों से उसने उपन्यास आदि खरीदकर पढ़ना प्रारम्भ कर दिया एवं सिगरेट पीने व भांग चढ़ाने की आदत भी पड़ गई थी। कुल मिलाकर रुपये चोरी का सिलसिला चलता रहा और रामप्रसाद अब उर्दू के प्रेमरस से परिपूर्ण उपन्यासों व गजलों की पुस्तकें पढ़ने का आदी हो गया था। संयोग से एक दिन भांग के नशे में होने के कारण रामप्रसाद चोरी करते हुए पकड़े गये। सारा भाण्डा फूट गया। खूब पिटाई हुई। उपन्यास व अन्य किताबें फाड़ डाली गई लेकिन रुपये चुराने की यह आदत न छूट सकी। हाँ, आगे चलकर थोड़ी समझ आने पर ही इस अभिशाप से मुक्त हो गये।

रामप्रसाद ने उर्दू मिडिल की परीक्षा में उत्तीर्ण न होने पर अंग्रेजी पढ़ना प्रारम्भ किया। साथ ही पड़ोस के एक पुजारी ने रामप्रसाद को पूजा-पठ की विधि का ज्ञान करवा दिया। पुजारी एक सुलझे हुए विद्वान व्यक्ति थे जिनके व्यक्तित्व का प्रभाव रामप्रसाद के जीवन पर दिखाई देने लगा। पुजारी के उपदेशों के कारण रामप्रसाद पूजा-पाठ के साथ ब्रह्मचर्य का पालन करने लगा। पुजारी की देखा-देखी उसने व्यायाम भी प्रारम्भ कर दिया। पूर्व की जितनी भी कुभावनाएँ एवं बूरी आदतें मन में थीं वे छूट गई। मात्र सिगरेट की लत रह गई थी जो कुछ दिनों पश्चात् उसके एक सहपाठी सुशीलचन्द्र सेन के आग्रह पर जाती रही। अब तो रामप्रसाद का पढ़ाई में भी मन लगने लगा और वह बहुत शीघ्र ही अंग्रेजी के पांचवे दर्जे में आ गया।

रामप्रसाद में अप्रत्याशित परिवर्तन हुआ। शरीर सुन्दर व बलिष्ठ हो गया था। नियमित पूजा-पाठ में समय व्यतीत होने लगा था। तभी वह मन्दिर में आने वाले मुंशी इन्द्रजीत के सम्पर्क में आया जिन्होने रामप्रसाद को आर्यसमाज के सम्बन्ध में बताया **'सत्यार्थ प्रकाश'** पढ़ने का विशेष आग्रह किया। **'सत्यार्थ प्रकाश'** के गंभीर अध्ययन से रामप्रसाद के जीवन पर आश्चर्यजनक प्रभाव पड़ा। बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय द्वारा रचित सुप्रसिद्ध गीत वन्दे मातरम् की लोकप्रियता के बाद भारतवर्ष के महान क्रांतिकारी पं. रामप्रसाद बिस्मिल की गजल सरफरोशी की तमन्नल ही वह अमर रचना है जिसे गाते हुए कितने ही देशभक्त फाँसी के तख्ते पर झूल गये।

सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है,
देखना है जोर कितना बाजु-ए-कातिल में है?
वक्त आने दे बता देंगे तुझे ऐ आस्माँ!
हम अभी से क्या बतायें क्या हमारे दिल में है?

- पं. लोचन शास्त्री, आर्यनगर, दुर्ग

ज्वलंत प्रश्न आतंक का संहार आज की आवश्यकता

-डॉ. बिजेन्द्रपाल सिंह

महाराजा मनु ने कहा है -

नाततायिवधे दोषो हन्तुर्भवति कश्चन ।

प्रकाशंताऽप्रकाशं वा मन्युस्तन्मन्यु म्रच्छति ॥

अर्थात् दुष्ट पुरुषों के मारने में हन्ता को पाप नहीं होता, चाहे प्रसिद्ध मारे चाहे अप्रसिद्ध, क्योंकि क्रोधी को क्रोध से मारना जानो क्रोध से क्रोध की लड़ायी हैं। स.प्र.षष्ठ समु.

यथोद्धरति निर्दाता कक्षं धन्यं च रक्षति ।

तथा रक्षेन्नृपो राष्ट्रं हन्याञ्च परिपन्थिनः ॥

अर्थात् जैसे धान्य का निकालने वाला छिलकों को अलगकर धान्य की रक्षा करता अर्थात् टूटने नहीं देता है वैसे राजा डाकू चोरों को मारे और राज्य की रक्षा करे।

शास्त्रों में शत्रुओं से राज्य की रक्षा करने का प्रकाश किया है, दुष्टों को मारने में मारने वाले को पाप नहीं होता दुष्ट की बुद्धि में सत्यासत्य का निर्णय लेने की क्षमता नहीं होती और वह प्रजा का नाश करने में तत्पर रहता है। मसूद अजहर जैसे व्यक्ति को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का आतंकवादी घोषित करना देश-विदेश व नागरिकों के हित में है, ओसामा बिन लादेन का सफाया अमेरिका ने कर दिया था आतंकवादी मानवता को नहीं समझते आए दिन समाचार माध्यमों से पता चलता है कि वह प्रजा पर कितने जघन्य अत्याचार करते रहते हैं महिलाओं का अपहरण बलात्कार फिर हत्या, पत्रकार की गला रेत कर निर्मम हत्या करना, एफिल टावर को बम से उड़ाने की घटना, मुम्बई होटल में बम धमाके वहां रह रहे देशी विदेशियों की हत्यां, आत्मघाती हमले पुलवामा की घटना और अब श्रीलंका में २१ अप्रैल को ईस्टर के दिन चर्च में भीषण आतंकी हमले। श्रीलंका में चर्चों व होटलों में आत्मघाती हमलों में २५३ लोगों को मार दिया गया था ५०० के लगभग घायल हुये थे।

श्रीलंका पुलिस ने इस हत्याकाण्ड के पश्चात मस्जिदों व घरों की तलाशी ली वहां अनेक प्रकार के नुकीले धारदार शस्त्र तथा बड़े आकार वाले चाकू, तलवारें सहित बड़ी मात्रा में विस्फोटक सामग्री प्राप्त हुई हैं। वहां की सरकार ने ऐसी सामग्री व पुविस तथा सेना के वस्त्र जमा करने का आदेश दिये हैं, आतंकवादी सेना व पुलिस के वस्त्रों में घटना करते कराते हैं यही स्थिति वुर्का की है वुर्का ऐसा वस्त्र है जिसमें बम विस्फोटक तथा शस्त्र छिपाकर कहीं भी ले जाया जा सकता है। केरल में मुस्लिम एजुकेशनल सोसायटी (एनईएस) के १५० के लगभग प्रोफेशनल, एजुकेशनल प्रशिक्षण में मुंह ढांकने वाले वस्त्र व बुर्का पर प्रतिबंध लगा दिया व सूचना जारी की इस पर आतंकवादी संगठन ने संस्थान प्रमुख को धमकी दी है। उन्होंने बुर्का पर प्रतिबंध राष्ट्र हित में किया था।

श्रीलंका में मदरसों के शिक्षा मंत्रालय से हटाकर मुस्लिम धार्मिक व सांस्कृतिक मंत्रालय में कर दिया गया है। हमलें में जुड़े अनेकों को गिरफ्तार कर लिया व ६०० मौलाना जो वीजा की अवधि समाप्त होने पर भी वहां मदरसों में रह रहे थे वापिस जाने का आदेश दिया है। श्रीलंका सरकार ने इस ओर कठोर कदम उठाकर उचित कार्य किया है, सराहनीय कार्य है। भारत में भी पाकिस्तानी आतंकवादी ठिकानों पर सर्जिकल स्ट्राइक कर आतंकवादियों के हौसले पस्त कर दिये गये। दुर्दान्त चाहे डाकू चोर लुटेरे हत्यारे आतंकवादी कोई भी हों

... विरुद्ध कठोर दण्डात्मक कार्यवाही कर तुरन्त निर्णय लेना ही चाहिए। आतंक को समाप्त करने हेतु व आतंक की हो रही घटनाओं को रोकने के लिये ऐसे संदिग्ध ठिकानों को नष्ट करने में भी पीछे नहीं रहना चाहिए राष्ट्र की रक्षा हेतु आवश्यक है। हमारे यहां भी ऐसा न हो प्रत्येक स्थिति पर ध्यान देना होगा। आतंकवादी घटनाएँ जिन परिस्थितियों में होती है। उन परिस्थितियों के विरुद्ध निर्णय लेना होगा। मुंह ढाक कर चलना, बुर्का, पुलिस व सेना के वस्त्र सामान्य जन भी पहनते हैं, रोक लगानी होगी आतंकियों के ठिकाने, मदरसें व अन्य स्थानों पर भी कार्यवाही करनी होगी क्योंकि यह वह परिस्थितियां हैं जहां से आतंकी घटनाओं को सहारा मिलता है।

पता - चन्द्रलोक कालोनी, खुर्जा

कविता

"जीवन"

हंस कर कटे या कटे रो कर,
यह जीवन तो सारा गुजर जायेगा ।।

रचयिता : मोहनलाल चड्डा

बुरे कामों में ही मन की रहती रुचि,
अच्छी बातें मन को सुहाती नहीं,
है संगत का असर या दोष मन का सदा,
आत्मा बुरी बात कभी भी बताती नहीं ।।
आत्मा के कहने पर जो चल पड़े
जीवन स्वयं ही उसका सुधर जायेगा
हंस कर कटे ....

o

कल्पना उनकी करे तो कैसे करे
जो वासना के वशीभूत दानव हो गये
जो भूल गये सब कुछ ही जुनून में
भाव हृदय में उनके सभी सो गये
वो प्यार से नहीं सुधरेंगे मार से
वरना वातावरण कभी न सुधर पायेगा
हंस कर कटे ....

oo

अभी सत्य बाकी है इस धरा पर
वरना शिराओं में रक्त बहना था मुश्किल
धर्म में अभी आस्था शेष है
वरना बात भी अपनी कहना था मुश्किल
ब्रह्मचर्य और ज्ञान अगर साथ है
रुप धरती का फिर से निखर जायेगा
हंस कर कटे ....

ooo

दुनिया में यह तो सबको पता
तमो गुण सब में होते हैं थोड़े
सत्य और धर्म की राह अपनाये
कर्म अपने को सत्गुण से ही जोड़े
"मोहन" पवित्र कर्म जब हो जायेगा
तभी मन भी गीत मधुर गायेगा
हंस कर कटे या कटे रो कर,
यह जीवन तो सारा गुजर जायेगा ।।

oooo

पता : एमआईजी-II, १७३,
हुडको भिलाई (छ.ग.)

सामयिक

विश्व पर्यावरण दिवस

डॉ. सुरेन्द्र सिंह कादियाण
पूर्व सम्पादकः "वैदिक सार्वदेशिक"
सभा भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली

५ जून हर वर्ष समूचे विश्व में पर्यावरण दिवस के रूप में मनाया जाता है। इसकी शुरुआत सन् १९७२ में हुई। भारत में वैदिक युग से ही पर्यावरण संबंधी चेतना निरन्तर विकसित होती रही है। पुराणों में ताल, तलाबों, बावड़ियों के निर्माण को पुण्य कर्म की संज्ञा दी गई है। वृक्षारोपण का बड़ा भारी फल बताया गया है और नदियों के प्रति श्रद्धा भावना विकसित कर इनके पवित्रीकरण कर बल दिया गया है।

भारत को पर्यावरण प्रदूषण से यदि बचना है तो उसे अपनी पुरानी वैदिक संस्कृति की ओर लौटना होगा और उन जीवन मूल्यों को अपनाना होगा जो वेदों ने स्थापित किये थे। इस दिशा में बढ़ते हुए हमें सर्वप्रथम अपने वृक्षों की सम्पदा को बचाना और बढ़ाना होगा, पशु, धन को संरक्षित व विकसित करने के लिए बूचड़खाने बन्द करने होंगे व शाकाहार को अपनाना होगा, अपनी नदियों व तालाबों का अस्तित्व बचाना होगा, नदी जोड़ों अभियान को राष्ट्र धर्म मान कर पूरा करना होगा, बड़े उद्योगों की बजाय लघु कुटीर उद्योगों का जाल पूरे देश में फैलाना होगा, ईंटों के भट्टों पर प्रतिबन्ध लगा कर नई तकनीक से ईंट बनाने को प्रोत्साहन देना होगा, रासायनिक उर्वरकों व रासायनिक कीट नाशकों का प्रयोग पूरी तरह वर्जित कर गोबर, कम्पोस्ट, केंचुआ खाद के विकल्प तैयार करने होंगे, पोलीथीन व प्लास्टिक वस्तुओं का निषेध करना होगा, धूम्रपान आदि पर प्रतिबन्ध लगाना होगा। मृदा, जल, वायु, आकाश से संबंधित जितने भी पर्यावरण-प्रदूषण कारक देश में मौजूद हैं उन सभी के उन्मूलन के लिए एक वृहद योजना तैयार करनी होगी जिसमें ऊपर लिखी मोटी-मोटी बातों को अनिवार्य रुप से शामिल करना होगा।

व्यक्तिगत स्तर पर हम भी पर्यावरण-प्रदूषण को कम करने में सहायक बन सकते हैं यदि हम पोलिथीन व प्लास्टिक से बनी वस्तुओं का इस्तेमाल बन्द कर दें, पानी की लीकेज को कंट्रोल करें, पानी का बेतरतीव इस्तेमाल करना छोड़ दें, पेयजल से स्कूटर, कार, मोटर साइकिल की धुलाई बन्द कर दें, वृक्षों पर कील ठोंक कर विज्ञापन पट्ठ न लगायें, पशुओं के साथ दुर्व्यवहार न करें, मांसाहार को छोड़ शाकाहार अपनायें, कार व बाइक का कम से कम इस्तेमाल करें, रेफ्रीजेटर, कूलर, ए.सी. का प्रयोग कम से कम करें, वन महोत्सव पर साल में एक वृक्ष अवश्य लगायें और उसे पानी देने की व्यवस्था करें यदि आपका किचन गार्डन है तो फल सब्जियों के पत्ते-छिलके से तैयार केंचुआ खाद का इस्तेमाल सब्जी उगाने में करें, टी.वी., रेडियो की आवाज कम रखें, घर का कूड़ा-कर्कट बाहर न फेंक कर ड्रम में इकट्ठा करें ४०वॉट के बल्ब से काम चल सकता है तो ६० व १०० वाट का बल्ब इस्तेमाल न करें। इन सब बातों के लिए आप अपने पड़ौसी, अपने मित्रों, अपने सगे-सम्बन्धियों को भी प्रेरित कर सकें तो पर्यावरण को स्वच्छ रखने में आपका भी महनीय योगदान रहेगा।

निःसन्देह भारत सरकार का पर्यावरण एवं वन मंत्रालय पर्यावरण जागरुकता बढ़ाने के लिए हर वर्ष करोड़ों रुपया विज्ञापनों पर खर्च करता है, तीन प्रान्तों की बड़ी-

बड़ी ३८ झीलों को संरक्षित करने की दिशा में ठोस कदम उठायें है। २० राज्यों की ३४ नदियों को राष्ट्रीय नदीं संरक्षण कार्यक्रम में शामिल किया है २६७ स्वच्छ विकास तन्त्र परियोजनाएँ शुरु की है, क्लोरो फ्लोरो कार्बन और हेलोन के उत्पादन और खपत को नियंत्रित करने की दिशा में ठोस कदम उठायें है, गिद्धों की संकटापन्न प्रजातियों को संरक्षित करने के पग उठायें हैं, वन्य क्षेत्र को विकसित करने की योजनाएँ बनाई हैं, वन्य मरुस्थल की रक्षा के लिए सुरक्षात्मक उपाय ढूंढे हैं, बढ़ते मरुस्थल को रोकने के लिए डेजर्ट एण्ड ड्रॉट प्रोन एरिया डेवलपमेन्ट प्रोग्राम चलाए जा रहे हैं, गाँवों के तालाबों का पुनः निर्माण कराया जा रहा है। ये सब कदम अपनी जगह ठीक हो सकते हैं, भले ही वे कागजी अधिक क्यों न हों और भ्रष्टाचार की भेंट क्यों न चढ़ रहे हों।

सवाल यह है कि यदि भारत सरकार और प्रान्तीय सरकारें पर्यावरण प्रदूषण को लेकर वास्तव में चिन्तित व ईमानदार है तो अब तक देश के बूचड़खाने बन्द क्यों नहीं हुए? मांसाहार को प्रोत्साहित क्यों किया जा रहा है ? धूम्रपान पर पूर्ण प्रतिबन्ध क्यों नहीं लगा है ? रासायनिक उर्वरकों और रासायनिक कीटनाशकों का प्रयोग वर्जित क्यों नहीं हुआ है? नदियों का जुड़ाव अभियान बन्द क्यों कर दिया गया ? लघु गुटीर उद्योगों के स्थान पर विशाल मिल्स, ईंट भट्टे, डिस्टिलरीज, सुगर मिल्स, क्लाथ मिल्स क्यों पनप रहें है ? नदियों में प्रदूषित जल क्यों प्रवाहित हो रहा है ? पोलिथीन और प्लास्टिक वस्तुओं का निर्माण प्रतिबंधित क्यों नहीं है ? जाहिर है कि देश के पर्यावरण को दूषित करने वाले ये सभी कारण न केवल मौजूद हैं बल्कि दिन-व-दिन फलते-फूलते भी जा रहे हैं जिससे पर्यावरण शुद्धि का नारा एक ढकोसला बनत जा रहा है और सरकार की ईमानदारी, कार्यशैली और इच्छा-शक्ति पर प्रश्न चिन्ह लगा रहा है।

पर्यावरण-शुद्धि के लिए हमारे पूर्वजों ने यज्ञ-पद्धति को विकसित किया था। बाढ़ और सूखा से निपटने के लिए यज्ञों की विशेष महत्ता रही है क्योंकि वे वर्षा करा भी सकते हैं और रुकवा भी सकते हैं। रोग निवारण में भी यज्ञ धूम का विशेष महत्व रहा है। यज्ञ में समिधा (लकड़ी), सामग्री (जड़ी-बूटियाँ), मिष्ठान (किशमिश, शक्कर, बादाम, अखरोट आदि), घृत (गाय का घी) का प्रयोग होता है जिसका अर्थ है इस पवित्र धार्मिक परम्परा को निभाने के लिए हमें अपनी वृक्ष सम्पदा, वन्य सम्पदा, जड़ी-बूटियों व गोधन को अनिवार्य रुप से संरक्षित रखना चाहिए। आज भले ही यूरोप और अमेरिका में यज्ञ-पद्धति को लेकर अनुसन्धान हो रहे हों और उनमें परमाणु-रोधक शक्ति की महत्ता स्वीकारी जा रही हो लेकिन हमारे देश में इसे साम्प्रदायिक कर्म-काण्ड मात्र मान कर उपेक्षित किया जा रहा है। वेद विरोधई सम्प्रदायों को तो यह फूटी आँख नहीं सुहाता। प्राचीन-काल में जब भी देश में कहीं अति-वृष्टि या अकाल की स्थिति पैदा होती थी तो यज्ञ कराने पर विशेष बल दिया जाता था और उसका तात्कालिक फल मिलता था।

आज भी वैज्ञानिक परीक्षणों से यज्ञों की यह फल-श्रुति सिद्ध हो चुकी है। लेकिन साम्प्रदायिक मूढ़ता के शिकार लोग कभी इसे पर्यावरण-प्रदूषण बढ़ाने वाली क्रिया घोषित करते हैं तो कभी घी, ईंधन जड़ी-बूटियों के अभाव और बर्बादी का रोना रोकर इसे निरस्त करने का प्रयास करते हैं। इन सभी तर्कों को खारिज करते हुए महर्षि दयानन्द और उनके आर्य समाज ने न केवल यज्ञ को व्यक्ति की दिनचर्या घोषित किया बल्कि इस प्राचीन परम्परा को लोकमानस में स्थापित कर इसके वैज्ञानिक पहलुओं को भी रेखांकित किया।

यज्ञ की यह परम्परा न केवल हमारी वन्य सम्पदा, हमारे पशु धन के संरक्षण का अक्षय सन्देश देती है बल्कि भोग्य पदार्थों के समान वितरण और आध्यात्मिक जीवन-जीने का अक्षय उपदेश भी देती है। इससे वैदिक जीवन मूल्यों की जीवंतता और महत्ता का भी रहस्योद्घाटन होता है। हमारा जीवन यदि यज्ञमय हो जाये तो भारत पुनः अपने स्वर्ण काल की ओर लौट सकता है तथा भारत ही नहीं पूरी विश्व को पर्यावरण प्रदूषण से मुक्त कर सकता है। क्या भारत और संयुक्त राष्ट्र संघ इस दिशा में कुछ सोचेगा, कुछ करेगा ?

वीरता की देवी रानी लक्ष्मी बाई

– डॉ. अशोक आर्य

भारत के स्वाधीनता संग्राम में देश की वीरांगनाओं ने यह सिद्ध कर दिखाया कि अबला कोमलांगी, रमणी ही नहीं वरण समय आने पर वह सबला, वज्रांगी व रणचण्डी का रूप धारण करने की शक्ति भी रखती है। इतना ही नहीं वह अपने नाम के अर्थ का विपर्यय करने में भी पूर्णतया सक्षम हैं। यह सब उनके बाल्यकाल से ही आरम्भ हो जाता है। जब महारानी लक्ष्मीबाई अभी मनुबाई ही थी तभी उसने बाल सुलभ क्रीड़ाओं में दुर्ग घेरना, चक्रव्यूह तोड़ना, बर्छी चलाना आदि के रुप में खेलें खेली। इन्हीं से ही उसका भावी जीवन प्रतिध्वनित हो गया था। विवाह के पश्चात् जब पति की मृत्यु होने पर अंग्रेज की कम्पनी सरकार ने उसकी एक न सुनी तथा झांसी की बागडोर अपने हाथ में लेने की घोषणा कर दी तो लक्ष्मीबाई ने चण्डी का रूप धारण करते हुए पुरुष वेश में समरांगण में जा डटी।

उसमें मोर्चा बन्दी की अद्भुत कला थी। तभी वह अंग्रेजों पर निरन्तर विजय पा रही थी तथा गोरे एक महिला से पराजित होकर मुंह छिपाते फिरते थे। १८ जून १८५८ को लक्ष्मीबाई ने बड़ी सरलता से ग्वालियर पर अधिकार कर लिया। यहां वह चारों ओर से घिरी हुई थी तो भी प्रातः उठकर स्नान ध्यान करना वह न भूलती थी। यहां भी प्रातः उसने यह सब नियम पूरे किये तथा वीरांगना स्वरूप अपना श्रृंगार किया केसरिया बाना पहिन शस्त्र उठाकर तथा शत्रु संहार के लिए साथियों सहित मैदान में जा डटीं। जब उसने पुत्र दामोदर राव को रामचन्द्रराव की पीठ पर बांधा तो सभी समझ गए कि आज वह अपना रणचण्डी का रूप दिखाने वाली है। कुछ ही क्षणों में तोपखाना आग उगलने लगा, अंग्रेजी सेना के साथ ही साथ उसका तोपखाना भी तहस-नहस होने लगा। जिस ग्वालियर की सेना की सहायता के लिए रानी ने जुही के माध्यम से कुमुक भेजी, उसी सेना ने ही विश्वासघात किया। रानी ने धैर्य से काम लिया। वह अंग्रेजी सेना को गाजर, मूली की तरह काटने लगी। गोरे सेना भागने को ही थे कि उन्हें पीछे से सहायता के लिए और सेना आ गई। रानी की पैदल सेना ने भी गोरों से भिड़ कर महाप्रलय का दृश्य बना दिया। इसी मध्य रानी लड़ते-लड़ते रानी अकेली रह गई तथा उसकी सहेली मुन्दरा भी बुरी तरह से घायल हो गई। रानी दोनों हाथों से बिजली की गति से तलवार चलाते हुए मार काट मचा रही थी। वह भी बुरी तरह से घायल हो चुकी थी। रानी के साथी भी काल बनकर परकीयों से जूझ रहे थे।

रानी की अन्तिम अवस्था को निकट देख गुलमुहम्मद ने उन्हें बाबा गंगादास की कुटिया तक पहुंचाया। यहां पहुंचने तक रानी की अवस्था बहुत बिगड़ चुकी थी। मुन्दरा तो ईश चरणों में जा चुकी थी। महारानी ने भी एक बार आंखे खोंली और फिर सदा के लिए प्रभु चरणों में लीन हो गई। इस प्रकार जो ज्योति २९ अक्टूबर १८३५ में प्रज्वलित हुई थी, वह मात्र २३ वर्ष में इतनी आभा बिखेर कर सदा के लिए अस्त हो गई, किन्तु इतिहास में उनके शौर्य के चर्चे सदा होते रहेंगे।

पता : मण्डी डबवाली, आर्य कुटीर, ११६, मित्र विहार, १२५१०४, हरियाणा

परामर्शात्मक

मेरी आवाज

- श्रीमती गीतादेवी साहू

प्राकृतिक रूप से पृथ्वी पर हजारों प्रकार के जीवधारी रहते हैं। उनमें से मानव जीवन विशेष है। मानव जीवन कर्म करने के लिए हैं। आज के मानव को कर्म का महत्व मालूम नहीं है। हमारे देश की संस्कृति और सभ्यता को विश्व में सर्वश्रेष्ठ माना जाता रहा है। आज की युवा पीढ़ी विदेशी पाश्चात्य सभ्यता को अपनाते जा रहे हैं। जिस समय हमारा देश अंग्रेजों के अधीन था उसम समय की परिस्थिति के कारण राजा राममोहनराय ने नारी जाति की सुरक्षा और सम्मान के लिए दहेज प्रथा और पर्दा प्रथा का विरोध किया था। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्यसमाज का संगठन किया जो आज पर्यन्त सक्रिय संस्था है। संस्था नारी जागरण के लिए हर संभव प्रयास करती है। नारियों की सुरक्षा के लिए आदर्श विवाह भी सम्पन्न करवाती हैं।

आज भारत सरकार लड़कियों को आगे बढ़ाने के लिए बहुत ध्यान दे रही है। पढ़ाई, नौकरी आदि आरक्षण की व्यवस्था है। १८ वर्ष के बाद मन पसंद शादी कर सकती है। कहीं कहीं लड़कियाँ अपने अधिकारों का गलत उपयोग कर रही है। अपने माँ-बाप की बिना सहमति गलत आचरण के लड़कों के चक्कर में फँस जा रही है। सरकार अब हर समाज के निर्धन वर-वधू का विवाह आयोजित करती है उनके सुखमय जीवन के लिए खर्च भी करती है। मनुष्य जन्म से ही सामाजिक प्राणी है। लोगों के सुख-दुःख में सहयोग के लिए समाज बनाया गया है। हर समाज के अपने कुछ कायदे कानून है। लोगों को सामाजिक नियम का पालन कर अनुशासित जीवनयापन करना हितकर होता है। माता-पिता अपने बच्चों के जन्म के बाद पालन-पोषण, पढ़ाई-लिखाई एवं व्यवसाय व्यवस्था करने तक तपस्या करते हैं। बड़े होकर बालिग बच्चे अपना फर्ज भूल जाते हैं। माता-पिता की अवहेलना करते हैं, जिससे वे बहुत दुखी होते हैं। शिक्षित होने के बाद भी बहुत घरों में मांसाहारी भोजन और शराब पीना खुशी से करते हैं, जबकि कुछ परिवारों में शुद्ध शाकाहारी भोजन करते हैं।

माता-पिता लड़कियों का रिश्ता तय करते समय इन सब बातों का ध्यान रखते हैं। बच्चे भावना में बहकर बिना सोचे विचारे मनमानी करते हैं। लड़कियों का १८ वर्ष के बाद शादी करवाने का नियम ठीक है किन्तु अविवेकपूर्ण पालक की बिना सहमति के शादी कर लेना गलत है। खासकर अंतर्जातीय विवाह जो लुक-छिप कर करते हैं सरासर गलत है।

आर्यसमाज संस्थाओं से निवेदन है कि अंतर्जातीय विवाह वाले लड़के-लड़कियों की पूरी तरह छानबीन करने के पश्चात् विशेष अनुकूल परिस्थितियों में ही विवाह सम्पन्न करायें। बुराई को रोकने के लिए उन्हें समझाया जाए, विदेशी सभ्यता से हटकर भारतीय सभ्यता अपनाने के लिए प्रेरित किया जावे। निर्धन एवं निराश्रित परिवार की सहायता करना जरूरी है। कुछ लड़कों का आचरण ठीक नहीं होता वे लड़कियों को अपने जाल में फँसा लेते हैं। झूठे प्रमाण-पत्र और बनावटी ठाठबाट दिखाकर अच्छे परिवार की लड़कियों से विवाह सम्पन्न कर लेते हैं। परिवार की इज्जत और लड़की का भविष्य दोनों बर्बाद हो जाता है। पुराण काल के महिषासुर जो आज भी कहीं कहीं दिखाई देते हैं उनकी राक्षसी प्रवृत्ति पर रोक लगाना जरूरी है। आर्यसमाज एक बड़ी प्रतिष्ठित संस्था है। संस्था को निरन्तर बनाए रखने के लिए व्यवस्था में आवश्यक सुधार करना अपेक्षित है।

पता : भिलाई-३, जिला-दुर्ग (छ.ग.)

आरोग्य

गर्मी के कारण होने वाली बीमारियाँ

– डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी
(होमियोपैथिक चिकित्सक)
मोबा. : ७०००२३६२१३, ९४२५५१५३३६

गर्मी का मौसम शुरु होते ही बीमारियों का प्रकोप बढ़ जाता है। अगर आपने थोड़ी सी लापरवाही कर दी तो लू, हीट स्ट्रोक, पेट की समस्या, अतिसार आदि कई बीमारियों की चपेट में आसानी से आ सकते हैं। इसलिए जरुरी है कि गर्मी के मौसम में इन बीमारियों से बचने के तरीके आजमाये जायें। आपकी थोड़ी सी सावधानी इन बीमारियों से बचाव कर सकती है।

गर्मी और लू का गहरा संबंध है। जैसे-जैसे गर्मी बढ़ती जाती है, वैसे-वैसे लोग लू का शिकार होने लगते हैं। गर्मी के बढ़ते ही लोगों को लू का डर सताने लगता है। बढ़ती गर्मी में लू से बचना जरुरी है। गर्मी में लू से बचने के लिए अलग-अलग उपाय करना बेहद जरुरी है। आइए जाने गर्मी में लू से कैसे बचें। निम्न टिप्स को अपनाकर गर्मी में लू से बचा जा सकता है।

लू से बचने के लिए गर्मी के मौसम में सावधानी बरतना बहुत जरुरी है। इसके लिए अधिक धूप में घर से बाहर न निकले। यदि निकलना जरुरी है तो पूरी तरह अपने को ढक कर रखें या फिर टोपी, चश्मा, छतरी इत्यादि का प्रयोग करें। गर्मी बहुत ज्यादा रेशमी, डार्क या चटकीले वस्त्र न पहनते हुए सूती व हल्के रंग के कपड़े पहने। इतना ही नहीं बहुत अधिक टाइट कपड़े न पहनें। गर्मी में लू से बचने के लिए जरुरी है कि खूब पानी पीएं। चाय-काफी के बजाय समय-समय पर नींबू पानी, सोडा, शिकंजी, लस्सी, शर्बत इत्यादि को अधिक प्राथमिकता दें।

धूप से आकर एकदम ठंडा पानी न पीएँ। तैलीय पदार्थों के बजाय पेय पदार्थों को अधिक लें। दिन में कम से कम दो बार ठंडे पानी से स्नान करें। गर्मी में बहुत अधिक देर रहने या घूमने-फिरने से लू लग जाती है। जिन लोगों का इम्यून सिस्टम कमजोर होता है या फिर बूढ़े, बच्चों या किसी अन्य बीमारी से पीड़ित व्यक्ति को लू लगने का अधिक खतरा रहता है। इसलिए इन लोगों को अधिक देर तक धूप में रहने से बचना चाहिए। गर्मी के मौसम में तन को अधिक से अधिक धूप में रहने से बचना चाहिए।

गर्मी के मौसम में तन को अधिक से अधिक ढककर रखें। तेज धूप में नंगे पांव न रहें। पेय पदार्थों में थोड़ा नमक मिलाकर पीने से लू से बचने में सहायता मिलती है। खाली पेट गर्मी में बाहर न निकलें। बहुत अधिक भीड़ वाली जगहों या गर्मी वाले क्षेत्रों में न जाएं।

होमियोपैथी उपचार : लू व गर्मी के बीमारियों से बचने के लिये कई होमियोपैथी औषधियां हैं। जो लक्षणों के आधार पर सेवन करने पर तुरन्त लाभ पहुंचाती है।

अपने होमियोपैथी चिकित्सक से सम्पर्क कर ईलाज कराना चाहिए।

पता : त्रिवेदी होमियो औषधालय, भारत माता स्कूल के सामने, टाटीबंध रायपुर (छ.ग.)

> *जो भीतर से शत्रु से मिला हो और अपने साथ ऊपर से मित्रता रखे, गुप्तता से शत्रु को भेद देवे, उसके आने-जाने में उससे बात करने में अत्यन्त सावधानी रखे, क्योंकि भीतर शत्रु ऊपर मित्र पुरुष को बड़ा शत्रु समझना चाहिए।*
>
> – सत्यार्थ प्रकाश

समाचार प्रवाह

आचार्य बलदेव राही सभा उपमंत्री (कार्यालय) का – वैदिक रीति से विवाह सम्पन्न

पोतरा (रायगढ़)। ग्राम पोतरा (लैलूंगा) जिला रायगढ़ निवासी आचार्य बलदेव राही छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमंत्री (कार्यालय) का शुभ विवाह ग्राम खूंटापानी (पत्थलगांव) जिला जशपुर निवासी सौ. कां. कान्ति के साथ दिनांक १३-५-२०१९ दिन सोमवार को पूज्य गुरुवर आचार्य श्री सत्यव्रत जी (सुन्दरपुर रोहतक हरियाणा) के पावन सान्निध्य में वैदिक रीति से ग्राम खूंटापानी जिला जशपुर में सोल्लास सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आशीर्वचन हेतु पूज्य गुरुवर आचार्य श्री सनत कुमार जी (चंडीगढ़ हरियाणा)से पधारे थे एवं नवनिर्वाचित सभा प्रधान आचार्य अंशुदेव आर्य एवं सभा मंत्री श्री दीनानाथ वर्मा तथा आचार्य पंकज जी, ऋषि कुमार आर्य मुख्य रुप से उपस्थित रहे। आशीर्वाद समारोह एवं स्वरुचि भोज का कार्यक्रम निवास स्थान ग्राम पोतरा में सम्पन्न हुआ। आशीर्वाद समारोह में सभा के पदाधिकारी, अंतरंग सदस्य एवं गणमान्य आमंत्रित अतिथिगण उपस्थित रहे साथ में श्री भुवनराम-श्रीमती कमलाबाई, सीताराम-सुमति, मीनाबाई-इन्द्रमणि, देवकी-लोकनाथ, सुंदरमोहन-टुपोबाई तथा परिवार के सभी सदस्यगण सहित अनेक आमंत्रित लोगों ने उपस्थित होकर नवदम्पत्ति को सफल वैवाहिक जीवन के लिए आशीर्वाद प्रदान किया।

वैदिक चिकित्सा गुरुकुलम् बड़ेडोंगर में नवीन प्रवेश प्रारम्भ

वैदिक चिकित्सा गुरुकुलम् एवं आयुर्वेद अनुसंधान केन्द्र बड़ेडोंगर जिला कोण्डागांव छ.ग. द्वारा संपूर्ण भारत वर्ष में पहली बार सत्र २०१९-२० के लिए कक्षा पांच में होनहार एवं प्रतिभावान बच्चों को निःशुल्क प्रवेश दिया जा रहा है। यह विद्यालय संस्कृत शिक्षा बोर्ड एवं संस्कृत विद्यामण्डलम् छत्तीसगढ़ से सम्बद्ध है। इसमें संस्कृत शिक्षा बोर्ड के पाठ्यक्रम के साथ ही पृथक से आयुर्वेद चिकित्सा विज्ञान की भी शिक्षा प्रदान की जायेगी। जो भी अपने परिवार/समाज/मित्र/रिश्तेदार के बच्चे को कक्षा पांच से ही आयुर्वेद की आरंभिक शिक्षा दिलाकर भविष्य में आयुर्वेदाचार्य डाक्टर बनाने के लिए इच्छुक हैं, वे नीचे लिखे पता व दूरभाष पर संपर्क कर विस्तृत जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

नोट : पहले आने वाले १५ प्रतिभावान बच्चों को निःशुल्क प्रवेश दिया जायेगा।

अध्यक्ष/निदेशक, वैदिक चिकित्सा गुरुकुलम् एवं आयुर्वेद अनुसंधान केन्द्र (निर्माणाधीन) व वृहद आयुर्वेद आर्ष ग्रंथालय, ग्राम यौगिक चिकित्सालय (निर्माणाधीन), बड़ेडोंगर, जिला कोण्डागांव छ.ग.

दूरभाष : ७५८७२९९६५७, ७४७०६७४३३४

गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय शुक्रताल मुजफ्फरनगर में प्रवेश प्रारम्भ

नये सत्र में प्रवेश १ जुलाई २०१९ से आरम्भ हो रहे हैं। यहां संस्कृत भाषा के साथ-साथ आधुनिक विषयों जैसे अंग्रेजी, गणित, इतिहास, भूगोल एवं अर्थशास्त्र आदि विषयों का अध्यापन सुयोग्य अध्यापकों के द्वारा कराया जाता है। कम्प्यूटर शिक्षा का उत्तम ज्ञान कराया जाता है। यहां पर मध्यमा स्तर की परीक्षाएँ उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा परिषद लखनऊ तथा महाविद्यालय स्तर का पाठ्यक्रम सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी द्वारा संचालित है। प्रवेश के लिए छात्र का ५वीं कक्षा उत्तीर्ण होना अनिवार्य है। विस्तृत जानकारी हेतु सम्पर्क करें -

स्वामी आनन्दवेश, बलदेव नैष्ठिक (प्रधानाचार्य) : ९९९७४३७९९०, प्रेमशंकर मिश्र (प्रधानाचार्य) : ९४११४८१६२४

यज्ञ प्रशिक्षण शिविर

(रविवार ९ जून से प्रारम्भ)

वैदिक धर्म में यज्ञो-महायज्ञों की महत्ता सर्वविदित है। देवयज्ञ-अग्निहोत्र इसके दैनिक नित्यकर्मों में सम्मिलित है। यह श्रेष्ठतम कर्म है तो यह तभी श्रेष्ठतम हो सकता है जब यह विधिवत उचित-रीति से किया जावे। समाज में यज्ञ परम्परा उचित रीति से चले व बढ़े इसके लिए वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन् रोजड़ गुजरात में स्मृति शेष आचार्य ज्ञानेश्वर जी आर्य ने इस प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना की। अनेक बहुकुण्डीय यज्ञ युक्त यज्ञ प्रशिक्षण शिविर लगाये और यज्ञ विषयक साहित्य भी छपवाया। अब आचार्य ज्ञानेश्वर जी आर्य की योजनानुरुप यज्ञ प्रशिक्षण शिविर प्रतिमाह एक रविवार को आयोजित करने का निर्णय किया गया है। इससे प्रातः ९.३० से १२ बजे व अपराह्न २ से ४.३० बजे तक लगभग ५ घंटे में यज्ञ प्रशिक्षण दिया जायेगा। प्रारम्भ यज्ञ परिचय (इतिहास, महत्व, उपयोगिता) से होगा। फिर अग्निहोत्र केन्द्र में बनी यह प्रदर्शनी दिखा समझा कर लघु चलचित्र द्वारा अग्निहोत्र की प्रक्रिया दिखाई-समझाई जायेगी। क्रियात्मक प्रशिक्षण देकर शिविरार्थियों के हाथों यज्ञ करवाया भी जायेगा। शिविर निःशुल्क है। स्वेच्छा से कोई सहयोग करना चाहे तो कर सकते हैं। कृपया अपने बच्चों या परिचितों को यज्ञ प्रशिक्षण हेतु भेजकर सर्वकल्याणकारी इस कार्य में पुण्य के भागी बनें। दूर से आने वाले एक दिन पूर्व आ सकते हैं। इच्छुक व्यक्ति यज्ञ के अभ्यास हेतु एक-दो दिन और आश्रम में रुक सकते हैं। दो दिन पूर्व तक पंजीकरण कराया जा सकता है।

वानप्रस्थ साधक आश्रम

(वैदिक ध्यान, साधना अध्यात्म व सिद्धान्त को समर्पित संस्था)

आर्यवन रोजड़, पत्रालय -सागपुर, जिला-साबरकांठा, गुजरात-३८३३०७, दूरभाष : ९४२७०५९५५०, ९७२३०६७१४३

अग्निदूत के ग्राहक सदस्यों की सेवा में

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के मासिक मुख पत्र **'अग्निदूत'** के समस्त ग्राहक सदस्यों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क १००/- यथाशीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें, जिससे कि उन्हें नियमित रूप से 'अग्निदूत' भेजा जाता रहे। जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हो, उनसे निवेदन है कि वे अपना दसवर्षीय शुल्क ८००/- रु. भेजें। इस कार्य को यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें। अन्यथा इस मास से अग्निदूत **भेजना बंद कर दिया जायेगा।** पत्र व्यवहार में अपना सदस्य संख्या तथा पूरा पता पिन कोड सहित अवश्य लिखें। **छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का भारतीय स्टेट बैंक दुर्ग शाखा में सेविंग एकाऊन्ट नं. : 32914130515, आई.एफ.एस.सी. SBIN0009075 कोड नं. अथवा देना बैंक दुर्ग शाखा में सेविंग एकाऊन्ट नं. 107810002857 आई.एफ.एस.सी. BKDN0821078 है, जिसमें आप किसी भी भारतीय स्टेट बैंक/देना बैंक की शाखा से आनलाईन शुल्क जमा कर सभा कार्यालय के दूरभाष नं. 0788-4030972 द्वारा सूचित करते हुए या अलग से पत्र लिखकर अवगत कर सकते हैं। अग्निदूत मासिक पत्रिका के सम्बन्ध में कोई भी शिकायत हो तो कृपया श्रीनारायण कौशिक को चलभाष नं. 9770368613 में सम्पर्क कर सकते हैं।**

- दीनानाथ वर्मा, मंत्री मो. 9826363578

कार्यालय पता : 'अग्निदूत', दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.) 491001, फोन : 0788-4030973

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के नवनिर्वाचित अंतरंग सदस्य (दि. 12-04-2019 से 11-04-2022 तक)

महेशमुनि वानप्रस्थी
अंतरंग सदस्य

रमेशकुमार साहू
अंतरंग सदस्य

कृतराम आर्य
अंतरंग सदस्य

तुलसी यादव
अंतरंग सदस्य

अभयनाथ झा
अंतरंग सदस्य

महेशर आर्य
अंतरंग सदस्य

मोतीराम आर्य
अंतरंग सदस्य

शोभाराम आर्य
अंतरंग सदस्य

तापेश्वर कुमार शर्मा
अंतरंग सदस्य

विश्वनाथ प्रधान
अंतरंग सदस्य

आनन्द कुमार भोई
अंतरंग सदस्य

दीपक कुमार पाण्डेय
अंतरंग सदस्य

चैनसिंह सिन्हा
अंतरंग सदस्य

महेश कुमार दुबे
अंतरंग सदस्य

रविन्द्र कुमार स्वर्णकार
अंतरंग सदस्य

दिनांक 13-5-2019 को सम्पन्न आचार्य बलदेव राही सभा उपमंत्री (कार्यालय) के शुभविवाह की चित्रमय झलकियाँ

CHH-HIN/2006/17407 जून 2019 डाक पंजी. छ.ग./दुर्ग संभाग/99/2018-20
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लायसेंस नं. : TECH/1-170/CORR/CH-4/2017-18-19

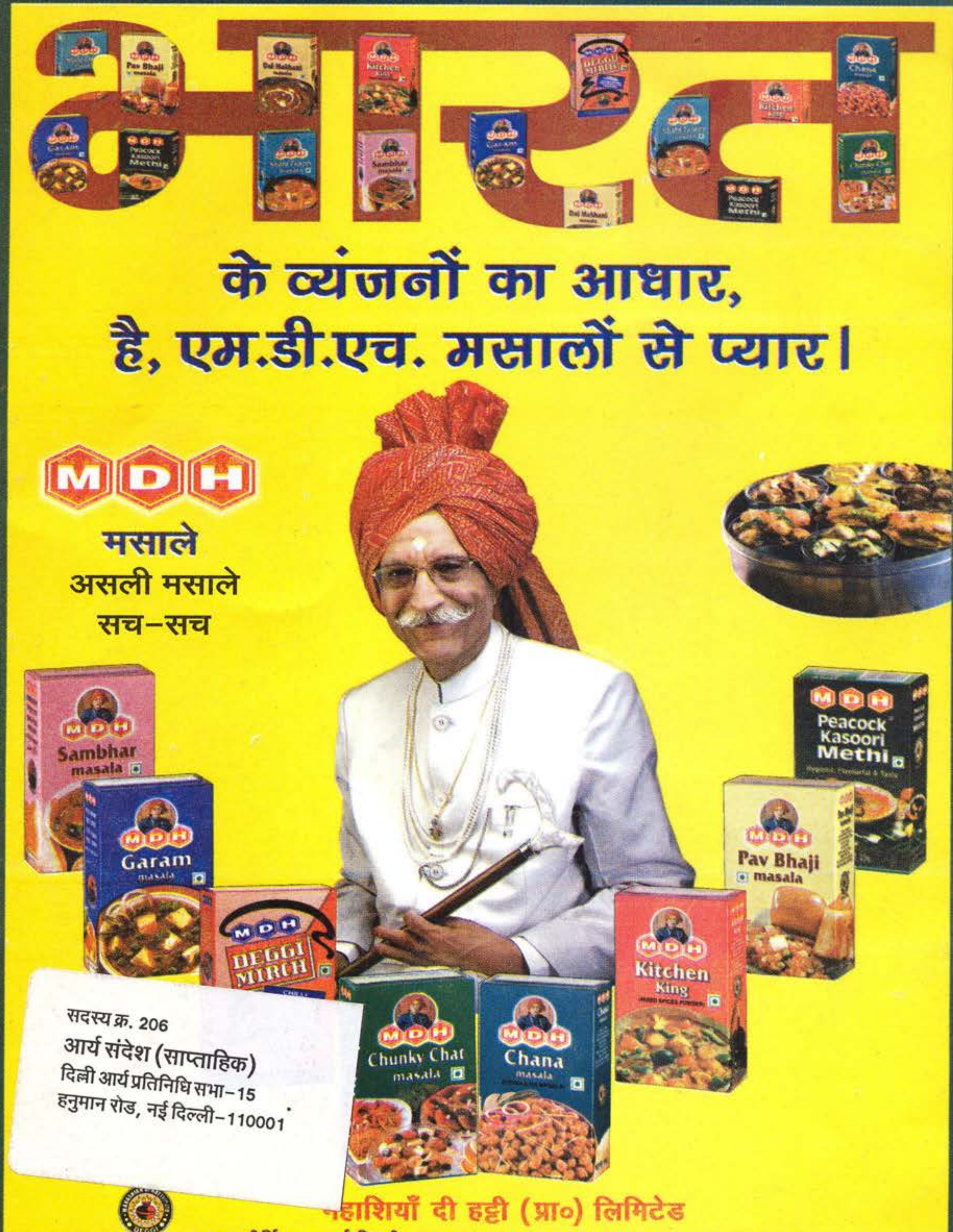

सदस्य क्र. 206
आर्य संदेश (साप्ताहिक)
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा-15
हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग के वैदिक मुद्रणालय से छपवाकर प्रकाशित किया गया।
प्रेषक : "अग्निदूत", हिन्दी मासिक पत्रिका, कार्यालय, छ.ग. प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.) 491001